तृतीय अध्याय

गिरिराज किशोर के नाटकों में चित्रित समस्याएँ

तृतीय अध्याय

"गिरिराज किशोर के नाटकों में चित्रित समस्याएँ"

प्रस्तावना :

मनुष्य को जन्म से लेकर अंत तक अपना जीवन यापन करते समय समस्याओं का सामना करते हुए आगे बढ़ना पढ़ता है। समस्या के कारण मनुष्य क्रियाशील बनता है। लेकिन समस्या का स्वरूप व्यापक बन रहा है। अनेक प्रकार की समस्याओं का एक जाल फैल रहा है। जिसमें इन्सान फँसता जा रहा है। नाटककार गिरिराज किशोर ने मनुष्य की यातना, पीड़ा देखी है और उन समस्याओं को अपने नाटकों के माध्यम से स्पष्ट किया है।

3.1 समस्या का अर्थ :

'समस्या' इस शब्द के अर्थ में अनेक विद्वानों ने अलग-अलग मत प्रकट किए है तथा अनेक शब्द कोशों में अर्थ बताएँ गए हैं। वे इस प्रकार है -

1. "हिंदी विश्वकोश के अनुसार -

   1. किसी श्लोक या छंद आदि का वह अंतिम पद या टुकड़ा जो पुरा श्लोक या छंद बनाने के लिए तैयार कर के दूसरों को दिया जाता है और जिसके आधारपर पूरा श्लोक या छंद बनाया जाता है।

      पर्याय - समासार्था, समस्यार्था, समाप्तार्थी

   2. संघटन

   3. मिश्रण, मिलाने की क्रिया।

   4. कठिन अवसर या प्रसंग।"[1]

2. 'हिंदी शब्द सागर' के अनुसार -

   1. संघटन

---

1. संपा नगेंद्रनाथ वसु - हिंदी विश्वकोश भाग 23 - पृष्ठ - 508

2. मिलने की क्रिया, मिश्रण।

3. किसी श्लोक या छंद आदि का वह अंतिम पद या टुकड़ा जो पूरा श्लोक या छंद बनाने के लिए तैयार करके दूसरों को दिया जाता है और जिसके आधार पर पूरा श्लोक या छंद बनाया जाता है।

4. कठीन अवसर या प्रसंग। कठिनाई जैसे - इस समय तो उनके सामने कन्या के विवाह की एक बड़ी समस्या उपस्थित है।"[1]

3. 'मानक हिंदी कोश' के अनुसार -

1. मिलने की क्रिया या भाव। मिलन

2. मिश्रण का संघटन।

3. उलझनवाली ऐसी विचारणीय बात जिसका निराकरण सहज में न हो सकता हो। कठिन या बिकट प्रसंग।

4. छंद, श्लोक आदि का ऐसा अंतिम चरण या पद जो काव्य रचना के कौशल्य की परीक्षा करणे के लिए उस उद्देश्य से कवियों के सामने रखा जाता है कि वे उसके आधार पर अथवा उसके अनुरूप छंद या श्लोक प्रस्तुत करें।"[2]

4. 'नालंदा विशाल शब्दसागर' के अनुसार -

1. वही उलझनवाली या विचारणीय बात जिसका निराकरण सहज में न हो सके। कठिन या बिकट प्रसंग। 'प्रॉब्लेम'।

2. संघटन

3. किसी श्लोक या छंद आदि का वह अंतिम चरण या पद जो पुरा छंद बनाने के लिए कवियों के सम्मुख रखा जाता है।"[3]

---

1. सं.डॉ.श्याम सुंदर दास - हिंदी शब्दसागर भाग 10 - पृष्ठ - 4967
2. सं.रामचंद्र वर्मा - मानक हिंदी कोश भाग 5 - पृष्ठ - 283
3. सं श्री नवलजी - नालंदा विशाल शब्दसागर - पृष्ठ - 1407

5. 'भाषा-शब्द कोश' के अनुसार -

1. "कठिन या जटिल प्रश्न, गूढ़ या गहन बात, उलझन, कठिन प्रसंग, किसी पद्य का अतिमांश जिसके आधार पर पूर्व पद्य रचा जाता है, संघटन, मिलने का भाव या क्रिया।"[1]

6. 'मानक-अंग्रेजी-हिंदी कोश' के अनुसार -

1. समस्या, उलझन, कठिन प्रश्न।
2. पहेली, दुर्बोध बात, उलझन ।
3. (रेखा) - निर्मेय ।
4. (तर्क) समस्या, प्रश्न।
5. (भौ.गणित) प्रश्न सवाल।
6. (शतरंज) मोहरों का नक्शा या व्यूह, पहेलिका।"[2]

उपर्युक्त कोशों से 'समस्या' शब्द के अनेक अर्थ स्पष्ट होते हैं लेकिन 'समस्या' शब्द का सभी कोशों में प्रमुख रूप से दिया गया अर्थ हैं अर्थ कठिन प्रसंग, उलझनवाली बात तथा जटिल प्रश्न।

3.2 समस्या का स्वरूप :

'समस्या' में सारी दुनिया जकड़ी हुई है। समस्या से छुटकारा पाना मुश्किल है। समस्या हमारे जीवन का एक प्रमुख अंग बन गयी है। इन्सान हर पग पर कई समस्याओं का सामना कर दर्द सहता रहता है। किसी एक समस्या को हल करते-करते दूसरी समस्या में उलझता है। इन्सान हमेशा 'समस्याओं' से दूर जाना चाहता है। लेकिन समस्याएँ पीछा नहीं छोड़ती। समस्या की निश्चित क्षेत्र-सीमा या प्रकार आंकी नहीं जा सकती। समस्याएँ कई प्रकार की हो सकती हैं। लेकिन सामान्य रूप से समस्याओं को दो विभागों में विभाजित किया जा सकता है।

---

1. डॉ रमाशंकर शुक्ल - रसाल भाषा शब्दकोश - पृष्ठ - 1521
2. सं.सत्यप्रकाश बलप्रसाद मिश्र पृष्ठ - मानक - अंग्रेजी - हिंदी कोश पृष्ठ - 1071

1 व्यक्तिगत तथा आंतरिक समस्या

2 बाह्य समस्या

व्यक्तिगत समस्या मनोविज्ञान से संबंधित है और बाह्य समस्या प्रकृति से संबंधित है। मनुष्य अपनी अतृप्त इच्छाओं को पूरा करने के लिए निरंतर कोशिशों में लगा रहता है। परिणामत: वह समस्याओं में फँसता जाता है। इस संदर्भ में डॉ.विमला भास्कर का कथन देखिए - "मनुष्य इच्छाओं का दास और इच्छाएँ सदैव अतृप्त रहती है, यह अतृप्ती कालांतर में जीवन में समस्याओं का जाल सा फैला देती है।"[1]

3.3 आर्थिक समस्या :

प्राचीन काल से लेकर आज तक 'अर्थ' को अनन्य साधारण महत्त्व रहा है। जीवन यापन करने के लिए 'अर्थ' का होना जरूरी है। 'अर्थ' के बारे में डॉ.गिरिराज शर्मा लिखते हैं - "अर्थ ही जीवन का विधायक है। युग का राजनीतिक और सामाजिक घटनाक्रम तात्कालिक आर्थिक प्रतिक्रिया से प्रभावित रहता है और सामाजिक तथा राजनैतिक विकास आर्थिक वर्ग के संघर्षो के आधार पर होता है।"[2] इसी संदर्भ में विमल गंगा प्रसाद लिखते हैं - "मनुष्य की आस्था पैसों पर टिकी हुई है। क्योंकि उसने देखा है संबंधों के उपर सबसे बड़ी जो चिज काम करती है, वह है पैसा। वही संबंधों को बनाता और बिगड़ता है।"[3] इससे स्पष्ट होता है कि जीवन में 'अर्थ' का महत्त्व अनन्य साधारण है।

3.3.1 अभावग्रस्त जीवन की समस्या :

गरीबी की समस्या आज की न होकर परम्परागत है। गरीबी से उभरने के लिए हमेशा गरीबों को ही आगे बढ़कर संघर्ष करना पड़ा है। महानगरों का विकास हुआ

---

1. डॉ.विमला भास्कर - हिंदी में समीक्षा साहित्य - पृष्ठ - 10
2. डॉ.गिरिराज शर्मा - गुंजन हिंदी नाटक मूल्य संकमण - पृष्ठ - 49
3. विमल गंगाप्रसाद - आधुनिक हिंदी कहानी - पृष्ठ - 79

है लेकिन गरीब वर्ग गरीब ही रह गया है। सामाजिक व्यवस्था आर्थिक एवं जातीयता की बुनियाद पर टिकी होने के कारण गरीबों को असहाय्य, दुर्बल और शक्तिहीन बना देती है। इस संदर्भ में डॉ.एस.पी.श्रीवास्तव का कथन दृष्टव्य है - "यदि गरीबी का सजीव चित्रण देखना है तो भारत के असंख्य गाँवों (जहाँ देश की करीब 70 प्रतिशत से ज्यादा जनता रहती है।) में जाकर देखना होगा कि गरीबी की मार कितनी भयानक है। घास-फूस या मिट्ठी के बने टूटे-फूटे मकानों में रहनेवाले बेजमीन तथा बजायदाद करोंड़ों एवं नंगे, भूखे, बेरोजगार, साधनहिन, अशिक्षित,अस्वस्थ, दुर्बल तथा असहाय्य लोग दिखाई देंगे जिनके चेहरे पर गरीबी की छाप खुले रूप से दिखाई देती है।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि भारत के अनेक गाँवों में गरीबी आज भी कायम है और गरीबी के कारण ही उनका विकास रूका हुआ है। नाटककार किशोर जी के नाटकों में आर्थिक समस्याओं के कारण उत्पन्न अनेक समस्याओं का चित्रण हुआ है।

गिरिराज किशोर के 'प्रजा ही रहने दो' नाटक में जुए का खेल देखने के लिए सारी प्रजा को राजाज्ञा दी जाती है। जो सेवक राज्य में यह राजाज्ञा सुनाने के लिए जाता है वह निरंतर गोमुख फूँकता रहता है। उसे ड़र रहता है कि यदि गोमुख फूँकना बंद कर दिया तो उसकी नौकरी चली जाएगी। उद्घोषक के मना करने पर भी सेवक बजाता ही रहता है। प्रस्तुत कथन देखिए - "अब लोग आये या न आये, मैं तो बजाता ही रहूँगा। नौकरी चली गई तो मेरे बच्चों का क्या होगा?"[2] स्पष्ट है कि नौकरी चली जाने के डर से ही इच्छा न होने के बावजूद भी सेवक मजबूरन गोमुख फूँकता रहता है।

किशोर जी के 'घास और घोड़ा' नाटक में अभावग्रस्त जीवन का चित्रण मिलता है। यह नाटक सामाजिक है। नाटक के प्रमुख पात्र पण्डित ख्यालिराम तथा उसकी पत्नी पण्डिताइन गरीब है। उसी गाँव का हजारीलाल अमीर आदमी है जिसकी बेटी

---

1. डॉ.एस पी श्रीवास्तव - भारतीय नागरिक समस्याएँ - पृष्ठ - 337
2. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो - पृष्ठ - 4

एक जाठ जाँत के ड्राइवर के साथ भाग जाती है और वही बेटी जब वापस आ जाती है तब पण्डित हजारीलाल सोचता है कि रूपयों से किसी भी चीज को खरीदा जा सकता हैं और अपनी इज्जत भी बचाई जा सकती हैं। इसलिए पण्डित हजारीलाल रूपयों के बल पर पण्डित ख्यालिराम के बेटे से रिश्ता जोड़ना चाहते हैं। अभावग्रस्त जीवन से छूटकारा मिलेगा केवल यही सोचकर पण्डित ख्यालिराम तथा उसकी पत्नी इस रिश्ते से खुश हैं। जब अमीर पण्डित हजारीलाल पण्डित ख्यालिराम के घर आनेवाला है तो अभावग्रस्त पण्डित ख्यालिराम तथा उसकी पत्नी के होश उड़ जाते हैं। प्रस्तुत कथन देखिए - "पहले कहते ना! किनच-किनचकर बात बताते हो। सिकार के बखत कुतिया हगाई। इतने भारी मानस कुटिया पर पधारे और यहाँ भंग के गिलास के सिवा कुछ हो ही नहीं। खडे क्या हो, अपने उन कुँवरजी को बुलाओं। बगल वालों के यहाँ से कुर्सी मेज मँगवा लो। मैं बड़ी मिसराइन के घर गिरोगाँठ का इन्तजाम करके आती हूँ...।"[1] पण्डित ख्यालिराम पण्डिताइन को आनेवाले अच्छें दिनों के बारे में बताता है। प्रस्तुत कथन दृष्टव्य है - "पण्ड़ित जी की बेटी से संम्बंध होते ही काल कट जाएगा। साक्षात् लक्ष्मी हैं... राज करोगी।"[2] स्पष्ट है कि आर्थिक अभावग्रस्तता के कारण ही इज्जत और मूल्य कोई मायने नहीं रखते। हर गरीब मजबूर ही नहीं बल्कि खुशी-खुशी पैंसों के लिए अपना सौदा करता है और यह भी सतर्कता बरतता है कि उसे जो मौका मिला है वह कही किसी कारण हाथ से न छुट जाए। प्रस्तुत कथन देखिए - "अरी ए बिट्टो, जा तू रामों के घर खेल आ। वहाँ चबर-चबर मत करना कहीं मोहल्लेभर में ढ़ोल पीटती फिरे। वैसे ही यो मोहल्लेवालों का कलेजा ठण्ड़ा रहता है यह खबर सुनकर कि सगाई हजारीलाल के यहाँ से आई है, बरफ हो जाएगा।... एक अच्छी सी फिराक भी तो नहीं जो आए-गए के सामने पहना दूँ।"[3]

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' घास और घोड़ा - पृष्ठ - 147
2. वही - पृष्ठ - 147
3. वही - पृष्ठ - 149

3.4 सामाजिक समस्या :

समाज में हर तरह की समस्याएँ होती है, जैसे बेईमानी, भ्रष्टचार, स्वार्थ -लोलुपता आदि। राम आहुजा के अनुसार सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के कारण समाज में समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। इस संदर्भ में वे लिखते है - "सामाजिक समस्या शब्द का उसी विषय के लिए उपयोग किया जाता है। जिसे सामाजिक आचारशास्त्र और समाज प्रतिकुल समझता है।"[1] इसी संदर्भ में डॉ.विमला भास्कर लिखती हैं - "देश और समाज की बदलती हुई स्थितियों में संक्राति युगीन संभावित जघन्यता, भ्रष्टाचार, बेईमानी, स्वार्थ-लोलुपता, घोर व्यक्तिवादिता, अंह कुठाओं, काम अतृप्तियों और खंडित व्यक्तित्ववाले मानव समुहों के बीच जीवन के नये मानव, नये नैतिक मान आस्था के नये स्तंभों विश्वास के नये आधारों तथा देश और मानवता को नई भव्यता, सुंदरता और संपन्नता प्रदान करने के लिए आकुल और प्रयत्नवान, दृढ अस्थावान, विश्वासी मानवीय चरित्रों को गढ़ने में संलग्न हे।"[2] स्पष्ट है कि सामाजिक समस्याएँ बढ़ गई है और दिन-ब-दिन बढ़ रही है। समस्याओं का स्वरूप बदल रहा है। परिणामत: इन्सान की जिंदगी सुंदर होने के साथ-साथ समस्यात्मक बन रही है।

3.4.1 अंधे कानून की समस्या :

किशोर जी के अनेक नाटकों में अनेक समस्याओं का उद्‌घाटन हुआ है। कानून और समाज के रक्षक पुलिस आज चरित्रहिन भ्रष्टाचारी और दायित्व का निर्वाह करने में असमर्थ हो गई है। आज की कानून व्यवस्था स्वार्थ-सिद्‌धि, वासनापूर्ति एवं धन-लोलुपता के कारण नैतिकता को गाढ़ चुकी है। सामान्य जनता तथा देश रक्षा के लिए कानून का निर्माण हुआ है। लेकिन आज की कानून व्यवस्था चित्र ऐसा नहीं है। कानून-व्यवस्था राजनीति की गुलाम बन गई है। न्याय-व्यवस्था की स्थापना मानवी जीवन

---

1. राम आहुजा - सामाजिक समस्या - पृष्ठ - 29
2. डॉ.विमला भास्कर - हिंदी में समस्या साहित्य - पृष्ठ - 9, 10

में व्याप्त समस्या, दु:ख, कष्ट, दैन्य, अत्याचार और सामाजिक असंतुलन आदि को रोकने के लिए की गयी थी। लेकिन इस व्यवस्था को चलाने वाले लोग स्वार्थ के कारण भ्रष्ट बन गए है। गिरिराज किशोर के नाटकों में प्रस्तुत भ्रष्टाचार का चित्रण बखुबी से हुआ है।

किशोर जी के 'प्रजा ही रहने दो' नाटक में गलत कानून-व्यवस्था का चित्रण मिलता है। जुए जैसे खेल को खेलने के लिए प्रजा को राजाज्ञा सुनाई जाती है। राजाज्ञा सुनानेवाले उद्घोषक के शब्दों में देखिए - "महाराज और महाराणी ने मानसिक स्वास्थ्य के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए निर्णय लिया है कि अगली अमावस्या को राजमहल में जुए का आयोजन किया जाएगा।"[1] जुए के खेल को राजा का खेल यह नाम देकर राजाज्ञा दी जाती है। प्रस्तुत कथन देखिए - "नागरिकों को आदेश दिया जाता है कि प्रत्येक नागरिक इस आयोजन में सम्मिलीत हो। नगर-रक्षक के कार्यालय में प्रवेश पत्र उपलब्ध होंगे। यदि कोई नागरिक उपस्थित न हो सके तो वह अपने घर पर इस क्रिड़ा का आयोजन करें। यदि कोई नागरिक इस राजाज्ञा का उल्लंघन करता हुआ पायेगा तो वह दंड का भागी होगा।"[2] अत: अपने अधिकार का गलत इस्तेमाल कर अपनी ही प्रजा को बुरी आदतों के लिए प्रयुक्त करनेवाला राजा यहाँ स्पष्ट होता है।

किशोर जी के 'जुर्म आयद' नाटक में भ्रष्ट कानून-व्यवस्था का चित्रण मिलता है। प्रस्तुत नाटक का उद्देश्य यह है कि समाज की रक्षा करनेवाला कानून जब भक्षक बनता है तो आम जनता का जीवन कितना कष्टमय बनता है। प्रस्तुत नाटका प्रमुख नारी पात्र उम्मेदी देवी अपने परिवार से पीड़ित होकर छोटी बेटी के साथ खुदखुशी करती है। उसकी बेटी मर जाती है लेकिन वह बच जाती है। उम्मेदी पर जुर्म सावित किया जाता है और उसे गुनहगार माना जाता है। उम्मेदी की मजबूरी कोई नहीं देखता। कानून तटस्थता से किसी घटना को देखता है। लेकिन जरूरत होती है

---

1. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो - पृष्ठ - 8
2. वही - पृष्ठ - 7, 8

घटना के पीछे छुपे हुए कड़वे सच को देखने की, जो नहीं देखा जाता। इसलिए सवाल यह उठता है कि क्या कानून सचमुच अंधा है? प्रस्तुत कथन देखिए – "उच्च न्यायालय के सम्माननीय न्यायमूर्ति के सामने यह एक बुनियादी सवाल है कि क्या यह कानून अंधा धृतराष्ट्र है जो अपनी बलशाली बाहों के घेरे में आनेवाली हर जानदार और बेजान चीज को चूर चूर कर देनें में ही सुख पाता है? अगर ऐसा है तो वह न कानून है न न्याय मात्र ताकत है।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि कानून सचमूच अंधा है।

कानून व्यवस्था से मजबूर न्यायाधिश शिवचरण उम्मेदी को गलत न्याय देने के कारण दु:खी हो जाते हैं। उनकी बेटी आशा पति से पीड़ित होकर खुदखुशी करती है। लेकिन न्यायाधिश शिवचरण दामाद पर जुर्म साबित नहीं कर पाते हैं। वे अपनी पत्नी के पास कानून के प्रति उदासिनता दिखाते हैं। प्रस्तुत कथन देखिए - "हम कागज है, टाईप-राईटर है, कलम है और केवल दस्तखत है। लाठी और डंडा है। दर्शक है। हम इन्सान क्यों नहीं रहे? कुर्सी क्यों हो गए।"[2]

न्यायाधिश की प्रस्तुत छटपटाहट से स्पष्ट हो जाता है कि कानून के रखवाले अपाहिज हैं जो औरों की बात तो दूर बल्कि खुद को भी न्याय देने में असमर्थ हैं। इस अंधे-कानून के कारण सामान्य जनता को न्याय मिलना मुश्किल हो गया है।

3.4.2 घटती मानवीयता की समस्या :

आधुनिक व्यक्ति अपनी भावनाओं का तथा मानवतावादी मूल्यों को तिलांजली देकर संकुचित मानवीयता को अपनाकर अपने स्वार्थ हेतु अमानवीयता को बढ़ावा दे रहा है। अपने आप में वह सिमटता जा रहा है।

किशोर जी के 'काठ की तोप' नाटक में घटती मानवीयता की समस्या को स्पष्ट किया गया है। इस नाटक के प्रमुख पात्र बड़े नवाब तथा छोटे नवाब भाई-भाई हैं।

---

1. गिरिराज किशोर - जुर्म आयद - पृष्ठ - 31, 32
2. वही - पृष्ठ - 57

लेकिन सत्ताशाली बनने के लिए एक-दूसरे पर आक्रमण करते रहते है। रिश्तों की जगह स्वार्थ पनप रहा है। प्रस्तुत कथन द्रष्टव्य है - "आप कीमत की फिक्र न करें। हमें हर कीमत पर हथियार खरीदनें हैं। हमें कीमत नहीं, बल्कि अपना दुश्मन दिखायी देता है।"[1]

इससे स्पष्ट हो जाता है कि आज मनुष्य में मानवीयता घटती जा रही है। वह रिश्ते-नाते भूलकर मानवीयता से कोसों दूर जा रहा है।

3.4.3 जंगल तोड़ की समस्या :

व्यक्ति अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए जंगलों पर आक्रमण कर रहा है। वह सृष्टि में स्थित वृक्षों का उन्मूलन कर जंगल खत्म कर रहा है।इसी कारण वह भविष्य में भयावह स्थिति की समस्या उत्पन्न कर रहा है। जिसके परिणाम समाज को भुगतने होंगे। किशोर जी के 'चेहरे-चेहरे किसके चेहरे' नाटक में जंगल तोड़ की समस्या का चित्रण किया गया है। मनुष्य के जविन में पेडों का महत्त्व अनन्य साधारण होकर भी मनुष्य उसे काटने के लिए तैयार हो जाता है। इस नाटक में दूसरा, तीसरा और चौथा पेड़ को दोषी मानते हैं, उनके अनुसार पेड़ बड़े होकर धरती का सारा पानी पी जाते हैं इसलिए चौथा पेड़ पर कुल्हाड़ी चलाता है तब वह पेड़ दुखी हो जाता है। प्रस्तुत कथन देखिए - "ठहरों भाई। मैं पेड़ हो गया, तुम आदमी के आदमी रहें। सारे जंगल में चर्चा है कि आदमी हमसे नाराज हो गया। लगता है तुम वो हम सब साथ-साथ पैदा हुए बढ़े और खेले। यह तो बताओं मैं बुरा कैसे हो गया? अपने बैर कि गंध को मैंने कभी नहीं सुँघा। तुम ही लोगों से सुना कि मेरा बौर सुगंध बिखेरता है फिर तुम ही लोगों में बाँट ही दिया। अपना फल भी अपने आप कभी नहीं खाया। सब तुम ही लोग ले गए। तुम से ही सुना मेरे फल बहोत मिठे होते हैं। अपनी छाया तक मैंने कभी अपने लिए नहीं रखी।उपर से तपा और नीचे वालों को ढक लिया...।"[2] इससे स्पष्ट होता है कि पेड

---

1. गिरिराज किशोर - काठ की तोप - पृष्ठ - 26
2. गिरिराज किशोर - काठ की तोप - पृष्ठ - 26

मनुष्य के लिए उपयोगी हैं फिर भी मनुष्य पेड़ को काटकर पर्यावरण के संतुलन को बिगाड़ रहा है। इसीलिए मनुष्य को प्रदूषण की समस्या का सामना करना पड़ रहा है।

3.4.4 बढ़ती स्वार्थी वृत्ति की समस्या :

आधुनिक व्यक्ति श्रेष्ठ मानवतावादी धर्म को तिलांजली देकर अपने स्वार्थ हेतु अपने आप में सिमटता जा रहा है। वह स्वार्थ लोलुपता के कारण अनैतिक तथा समाज विघातक कार्यों में उलझता जा रहा है। वह रिश्तों को भूलकर संकुचित विचार प्रणाली अपना रहा है। जिसमें उसके स्वयं तथा दूसरों का भी अहित समाहित है इससे वह अनभिग्ज्ञ है।

किशोर जी के 'चेहरे-चेहरे किसके चेहरे' नाटक में स्वार्थ की समस्या' का चित्रण किया गया है। प्राचीन काल से लेकर आज तक मनुष्य किसी-न-किसी स्वार्थ के कारण अपना जीवन बिता रहा है। मनुष्य स्वार्थ से इतना अंधा हो गया हैं कि वह रिश्ते नाते तक भूल गया है। इस नाटक में दुसरा, तीसरा और चौथा मानते है कि पेड़ बड़े होकर सारी धरती का पानी पी जाते हैं इसीलिए पेड़ दोषी है। इस कारण उनको काट देना चाहिए। लेकिन वे तीनों ये नहीं देखते की पेड़ो के उपयोग क्या है? पेड़ इस धरती को तथा मनुष्य को क्या देता है। मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए पेड़ काटता है। चौथा पेड़ पर कुल्हाडी चलाता है, तब पेड़ दुखी हो जाता है। प्रस्तुत कथन दृष्टव्य है - आदमी स्वार्थी तो था, पर इतना नहीं। पत्ते नोचता था, छाल खरोचता था, लकड़ी काटता था, फूल तोड़ता था, पर मारता नहीं था। कोई मारने आया तो बचाता था। पता नहीं, उसने एकाएक कौनसा पाठ पढ़ लिया कोई आता है तो मैं बाँहे फैलाकर स्वागत मैं तैयार रहता हूँ। जाते समय कुछ ना कुछ देता ही रहता हूँ। और कुछ नहीं तो ठंडी हवा, तन की सुगंध, कोई बेमौसम ठेता भी उछाल देता तो भी बुरा नहीं मानता। सोचता हूँ आदमी का बच्चा है! दो-चार पत्ते गिरेंगे, छोटी-मोटी डाल टूटेगी। बस।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि

---

1. गिरिराज किशोर - चेहरे-चेहरे किसके चेहरे - पृष्ठ - 65

मनुष्य स्वार्थ में अंधा होकर जंगल काट रहा है और पर्यावरण से अपना रिश्ता नाता भूल रहा है।

किशोर जी के 'जुर्म आयद' नाटक में न्यायाधीश शिवचरण का दामाद अमीर है। फिर भी उसका स्वार्थ कम नहीं है। वह अपने बॉस को खुश करने के लिए अपनी पत्नी को ले जाना चाहता है। क्योंकि बॉस खुश होकर तनख्वाह बढ़ाएगा। अत: वह स्वार्थ के कारण अपनी इज्जत को महत्त्व नहीं देता। उसकी पत्नी याने न्यायाधिश शिवचरण की बेटी आशा अपने दोस्तों को फोन लगाती है तो वह आशा को डांटता है। प्रस्तुत संवाद देखिए - "फोन इतना जरूरी नहीं जितना सेक्रेटरी साहब की पार्टी में मेरे साथ जाना। उन्होंने खासतौर से तुम्हें लाने के लिए कहा है। वे तुम्हें पसंत करते हैं।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि व्यक्ति अपने मकसद में कामयाबी पाने के लिए अपनी पत्नी का भी इस्तेमाल करता है। अत: उसमें दिन-ब-दिन स्वार्थ की समस्या बढ़ रही है।

किशोर जी के 'काठ की तोप' नाटक में मनुष्य स्वार्थ से कितना अंधा बन सकता है इसका चित्रण बखुबी से किया गया है। इस नाटक में बड़ा नवाब तथा छोटा नवाब भाई-भाई होकर भी स्वार्थ से इतने अंधे हो जाते हैं कि अपने रिश्ते भी भूल जाते हैं। वे एक दूसरे को छोटा दिखाने के लिए आपस में लढ़ाई करने लगते हैं। प्रस्तुत कथन देखिए - "कोई भाई रहा न यार रहा,

सबको स्वारथ मार रहा

सच्चाई में झूठ घुला

जो जीता या हार गया।"[2]

इससे स्पष्ट होता है कि मनुष्य सत्ताशाली बनने के लिए रिश्ते-नाते भूल कर अपने भाई पर भी हमला करता है। अत: वह स्वार्थ की समस्या में फँसता जा रहा है।

---

1. गिरिराज किशोर - जुर्म आयद - पृष्ठ - 35
2. गिरिराज किशोर - काठ की तोप - पृष्ठ - 24

3.4.5 भीषण युद्ध की समस्या :

भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता की संसार में अपनी अलग पहचान है। विश्व में कई युद्ध हो चुके हैं और मानव युद्ध में समाहित अहित से अवगत होकर भी अपने स्वार्थ के कारण संघर्ष करता आ रहा है। युद्ध के कारण मनुष्य को कई समस्याएँ तथा दूष्परिणामों का सामना करना पड़ा है।

गिरिराज किशोर ने 'प्रजा ही रहने दो' इस नाटक में युद्ध की भीषण समस्या का चित्रण किया है। प्राचीन काल से लेकर आज तक अपनी सुरक्षा, राजनीति, स्वार्थ, एक-दूसरे को छोटा दिखाने हेतु भीषण युद्ध हो चुके हैं। इसका अंत जीवित हानी तथा आर्थिक हानी ही हुआ है। प्रस्तुत नाटक में महाभारत का चित्रण है। युद्ध में पांडव विजय पाते हैं लेकिन सारा सैन्यदल मारा जाता है। विजय पाकर भी युदिधष्ठिर सभी जगह सूनापन देखता है। प्रस्तुत कथन दृष्टव्य है - "कई बार लगता है यह अंधकार मेरे रोम-रोम से निकलकर गहारा होता जा रहा है। हस्तिनापुर में घुसते ही जब सबकी दृष्टियाँ मुझसे पुछेगी की हमारे पुरुष संरक्षक कहा है। तो मैं क्या करूँगा? युद्ध में विजयी होकर लौटना कितनी बड़ी प्रवंचना है।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि सत्ताशाली बनने के लिए एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र से युद्ध करके भयावह स्थिति निर्माण कर रहा है। जिससे जीवित हानी तथा आर्थिक हानी होने की संभावना पैदा होती है।

किशोर जी के 'काठ की तोप' नाटक में भीषण युद्ध की समस्या का चित्रण किया है। प्रस्तुत नाटक में छोटे नवाब तथा बड़े नवाब भाई-भाई होकर भी एक दूसरे को छोटा दिखाने के लिए लड़ाई करते रहते हैं। बड़े नवाब कि आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण वह युद्ध से चिंतित है। प्रस्तुत संवाद दृष्टव्य है -"छोटे नवाब के यहाँ तो हाथियारों का अंबार लगता है। बीच-बीच में उनके आदमी हमारे दरख्त गोलाबारी करने लगते है - हमारे आदमी जवाब देकर उन्हें खामोश तो कर देते हैं लेकिन

---

1. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो - पृष्ठ - 104, 105

अगर किसी दिन पूरा हमला हो गया तो हम क्या करेंगे? "[1] इससे स्पष्ट होता है कि मनुष्य अपने आप को सत्ताशाली बनाने के लिए कुटनीति अपनाकर अपने भाई तथा रिश्तेदारों के खिलाफ भी युद्ध करने के लिए तैयार हो रहा है। वह खुद ही युद्ध की भीषण समस्या को निर्माण कर रहा है।

3.4.6 समाज में बढ़ते गैरकानूनी कार्य की समस्या :

समाज में जिने का तथा विचार करने का हक हर व्यक्ति को कानून ने दिया है, लेकिन समाज में नारी पर आज भी अत्याचार किए जा रहे हैं। मनुष्य गैरकानूनी कार्य कर रहा है। रेस, सट्टा, जुआ जैसे भयानक खेल वह खेल रहा है। उसमें वह अपनी पत्नी को भी दांव पर लगा रहा है।

गिरिराज किशोर के 'प्रजा ही रहने दो'इस नाटक में गैरकानूनी कार्य की समस्या का चित्रण किया है। मनुष्य राजनीति के लिए गैर कार्य करने के कारण अपना आत्मसम्मान कम कर रहा है। इस नाटक में पांडव और कौरव सत्ता के लिए जुआ खेलते हैं। पांडव जुए में हार जाते हैं, उनके पास दाँव पर लगाने के लिए कुछ नहीं बचता। शकुनि युधिष्ठिर को जुए में द्रौपदी को लगाने के लिए कहता है। प्रस्तुत कथन दृष्टव्य है - "अभी भी खेलना चाहते है, तो खेलो। नहीं मानते तो लगाओ पांचाली का दांव पर। पांचाल देश की राजकुमारी और पांडवों की पत्नी पांचाली।"[2] इससे स्पष्ट होता है कि समाज में गैरकानूनी कार्य बढ़ते ही जा रहें है। मनुष्य गैरकानूनी कार्य में फँसता जा रहा है। वह मजबूर होकर गलत काम कर रही है। दिन-ब-दिन यह समस्या बढ़ती जा रही है।

3.4.7 अनैतिक संबंधों की समस्या :

मनुष्य जब शारीरिक अतृप्त वासनाओं से पीड़ित रहता है तब वह अपनी

---

1. गिरिराज किशोर - काठ की तोप - पृष्ठ - 32
2. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो - पृष्ठ - 36

अतृप्त वासनाओं को अनैतिक मार्गों को अवलंब कर तृप्त करता है। वह नैतिक-अनैतिक से परे रहकर समाज के अमान्य कुकृत्यों में लिप्त रहता है। किशोर जी के 'प्रजा ही रहने दो' नाटक में अनैतिक संबंध की समस्या का चित्रण किया गया है। प्राचीन काल के नियोग पद्धति का चित्रण किया है। इस नाटक में कर्ण जब विदुर को बताता है कि कृष्ण ने मुझे द्रौपदी का छटा पति बनने का लालच दिया था तो विदुर उसे अपमानित करता है। सुयोधन इस कारण विदुर पर आरोप लगाता है। प्रस्तुत कथन दृष्टव्य है - "क्षमा करें तो शंका का समाधान चाहता हूँ। मांडव्य ऋषी के शाप से ही धर्मराज ने आपके अर्थात विदुर के रूप में जन्म लिया है। मैंने सुना है धर्मराज की ही कृपा से कुंती चाची ने भाई युधिष्ठिर को जन्म दिया। कुंती चाची को पुत्र दान देनेवाले धर्मराज क्या हमारे चाचा विदुर से कोई भिन्न धर्मराज है।"[1] अत: स्पष्ट होता है कि लेखक पौराणिक अनैतिक संबंधों की ओर इशारा कर अनैतिक संबंध की समस्या की जड़ को स्पष्ट कर रहे हैं और साथ ही इस समस्या की व्याप्ति स्पष्ट कर रहे हैं।

गिरिराज किशोर के 'घास और घोड़ा' नाटक में ग्रामीण जीवन अनैतिक संबंधों का चित्रण किया गया है। प्रस्तुत नाटक में विमला एक गरीब औरत है और उसका पति शराबी है। इसीलिए विमला प्रधान के बेटे के साथ अनैतिक संबंध रखती है। विमला के घर जब प्रधान का बेटा आता है तब वह प्रधान के बेटे को समझाती है। प्रस्तुत संवाद देखिए - "अपने लिए एक औरत ले आओ। पराए मर्द की औरत के सहारे कब तक रहोगे?"[2] प्रधान का बेटा उसे देखकर हँसता है तो वह उसे टोकते हुए कहती है - "हँसो नहीं, समझो। पराई औरत, कम कठपुतली से ज्यादा हो जाती है। मुझे लगता है, न मैं तुम्हारे साथ औरत रह पाती हूँ न उनके साथ। उनके दाँत गन्दे है, तुम्हारे उजले, पर औरत तो उन्हीं की हूँ।"[3]

---

1. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो - पृष्ठ - 36
2. गिरिराज किशोर - घास और घोड़ा - पृष्ठ - 163
3. वही - पृष्ठ - 163

अत: इससे स्पष्ट है कि अपनी आर्थिक स्थिति से मजबूर होकर विमला प्रधान के बेटे के साथ अनैतिक संबंध रखती है।

पण्डित हजारीलाल अमीर है लेकिन उसकी बेटी जाठ़ जात के ड्राइवर के साथ भाग जाती है और फिर कुछ दिनों के बाद घर वापस आ जाती है। इसीलिए हजारीलाल गरीब घर के पण्डित ख्यालिराम के बेटे द्वारिका के साथ शादी का रिश्ता जोड़ना चाहता है। पण्डित हजारीलाल की पत्नी को यह रिश्ता पसंद नहीं है। इसीलिए पण्डित हजारीलाल अपनी पत्नी से बेटी के बारे में भला-बुरा कहता है। प्रस्तुत कथन दृष्टव्य है - "नाव में छेद हो तो उसकी मरम्मत जल्दी से जल्दी कर लेनी चाहिए।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि समाज में अनैतिक संबंधों की समस्या बढ़ रही है। गिरिराज किशोर ने अपने नाटकों के माध्यम से समाज में बढ़ रही इस समस्या का चित्रण बखुबी से किया है।

3.4.8 आत्मसम्मान की समस्या -

मान-सम्मान, पत-प्रतिष्ठा हर व्यक्ति की अस्मिता तथा अस्तित्व का मानबिंदु है। समाज में अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए व्यक्ति संघर्षरत रहता है। लेकिन आज आत्मसम्मान एक समस्या बन गई है। जिसमें व्यक्ति खुद के मान-अपमान, पत, सत्ता के लिए संघर्ष कर रहा है। रिश्ते-नाते भूलकर आत्मसम्मान को बढ़ावा दे रहा है।

गिरिराज किशोर के 'प्रजा ही रहने दो' इस नाटक में आत्मसम्मान की समस्या का चित्रण हुआ है। प्रस्तुत नाटक में सुयोधन पांडवों के साथ युद्ध करने का निर्णय लेता है। लेकिन उसे विदूर तथा धृतराष्ट्र रोकने का प्रयास करते हैं, लेकिन इस रोक का गलत अर्थ निकालकर उस समय सुयोधन सोचता है कि मेरा कुछ अस्तित्व है या नहीं? इस युद्ध से ही मैं अपना स्थान निर्माण कर सकता हूँ। प्रस्तुत कथन दृष्टव्य है -

---

1. गिरिराज किशोर - घास और घोड़ा - पृष्ठ - 75

"मेरी बात सुनें, आप संबंधों और अपनी कुंठाओं की ज्वाला में मेरी आहुति न दें। अपने निर्णय मुझ पर न थोंपे। मुझे अपने निर्णयों के मार से ही मरने दो यह कैसी नपुसंक स्थिति है कि मैं, अपने भविष्य को स्वयं पहचानने में असमर्थ हूँ। अपने पैरों चलकर अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकता। दूसरों के निर्णयों की रस्सी अपने गले में बाँधकर मैं आत्महत्या का दोषी नहीं बनना चाहता। मुझे अपने जीने मरने का निर्णय स्वयं लेने दो।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि मनुष्य अपने आत्मसम्मान के लिए युद्ध, कुटनीति तथा संघर्ष कर रहा है। वह रिश्तें-नातों को भी मूल्यहीन समझ रहा है। अत: आज आत्मसम्मान की समस्या फैलती जा रही है।

3.4.9 प्रतिशोध की समस्या :

व्यक्ति अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए उस पर किए घात के बदले प्रतिघात करने के लिए तत्पर रहता है। वह उस पर ढाए गए अन्याय, अत्याचार के खिलाफ प्रतिशोध की भावना मन में लेकर एक सार्थक संघर्ष करने के लिए कार्यरत रहता है।

गिरिराज किशोर के 'नरमेध' नाटक में प्रतिशोध की समस्या का चित्रण किया गया है। मनुष्य के मन में प्रतिशोध की भावना जब निर्माण होती है तब मनुष्य बुरे विचारों के अधिन होकर कुकर्म करने लगता है। प्रस्तुत नाटक में तारा यह नारी पात्र है। तारा नरेन से प्यार करती थी लेकिन उसे इंद्रराव से शादी करनी पड़ती है। इस कारण तारा और नरेन के बीच संबंध नहीं रहते। तारा का बेटा नरेन की बेटी वंती के साथ प्यार करता है। वे दोनों शादी करना चाहते हैं। उन दोनों की शादी के लिए इंद्रराव की अनुमति है। लेकिन वन्दु का भाई रंजन वंती से प्यार करता है। यह बात तारा जानती है। इसलिए तारा वन्दु और वंती की शादी का विरोध करती है। तारा को लगता है कि नरेन से प्यार करने के कारण इन्द्रराव प्रतिशोध लेना चाहता है। इसीलिए

---

1. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो - पृष्ठ - 75

वन्दु और वंती की शादी के लिए उसने अनुमति दे दी है। प्रस्तुत कथन देखिए - "बात मानने चला जाना बेगानेपन का सबूत भी होता है। इन्द्र ने मुझसे बदला लेने के लिए ही वंती, नरेन, नरेन की पत्नी से संबंध बढ़ाए थे। विवाह के लिए मैंने मना कर दिया तो भी इन्द्र चुप रहे। वन्दु उनका बेटा भी तो था।"[1] अत: स्पष्ट होता है कि मनुष्य उस पर किए गए घात का प्रतिशोध लेना चाहता है।

गिरिराज किशोर के 'प्रजा ही रहने दो' नाटक में महाभारत के युद्ध और भ्रष्ट राजनीति का चित्रण मिलता है। प्रस्तुत नाटक में प्रतिशोध की समस्या का भी चित्रण प्रस्तुत किया है। सुयोधन जब बताता है कि मैं पांडवों को इतनी धरती भी नहीं दूँगा जितनी सुई की नोक से बिंध सके तब कर्ण सुयोधन को बताता है कि वह उसके साथ है। इस कारण विदुर कर्ण पर आरोप करते हैं। प्रस्तुत कथन देखिए - "उस दिन जब भीष्म चाचा ने तुमसे कहा था कि कर्ण दूसरे की लड़ाई में घुस कर अपना हिसाब न चुकाओं तो तुम बोल नहीं पाते थे। हीन भावना मनुष्य के मनोबल को क्षीण करती है।"[2] इससे कर्ण की पांडवों के प्रति होनेवाली प्रतिशोध की भावना स्पष्ट होती है।

शकुनि ने अपने दाँव पेच से युधिष्ठिर को जुए में हरा दिया था। उस समय द्रौपदी के वस्त्र निकलकर द्रौपदी को अपमानित किया गया था। कुंती द्रौपदी को बताती है कि उसे जीवनभर मानसिक पीड़ा से त्रस्त किया गया था। तब द्रौपदी कुंती से कहती है मैं जानती हूँ माँ। मैं नहीं जानुंगी तो और कौन जानेगा। द्रौपदी अपने अपमान के बारे में युधिष्ठिर से कहती है। प्रस्तुत कथन देखिए - 'मैं यदि कोई स्वप्न पालुँगी तो अपने अपमान के प्रतिशोध का। मेरे चीर-हरण के समय कौरवों की स्त्रियां ठठ्ठा-ठठांकर हंस रही थी। अब मैं उनके रूदन की बानगी भी देखना चाहती हूँ। तब तक मेरा कोई पति होगा न भाई, न ससुर न संबंधो।"[3] अत: स्पष्ट होता है कि गिरिराज किशोर ने प्रस्तुत नाटक के माध्यम से कर्ण तथा द्रौपदी के प्रतिशोध को बखुबी से स्पष्ट किया है।

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' नरमेध - पृष्ठ - 52
2. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो - पृष्ठ - 77
3. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो - पृष्ठ - 57

3.4.10 समाज में बढ़ते खोखलेपन की समस्या :

समाज में अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए इन्सान उसके पास जो है उससे ज्यादा दिखाने की कोशिश कर रहा है। समाज में बढ़ता हुआ यही खोखलापन तथा दिखावटीपन भी एक समस्या बन गयी है। व्यक्ति अपनी वास्तविकता से दूर जाकर अपने-आप को समाज में ऊँचा स्थापित करने के लिए हैसियत से ज्यादा खर्च कर रहा है।

गिरिराज किशोर ने 'काठ की तोप' नाटक में दिखावटीपन की समस्या का चित्रण किया है। प्रस्तुत नाटक में मनुष्य आर्थिक समस्या के संकट में होकर भी किस तरह अमीर दिखाने की कोशिश करता है, इसका चित्रण किया गया है। प्रस्तुत नाटक में मटरुमल नाम का पात्र बड़े नवाब के यहाँ खर्चा दिखाने का काम करता है। बड़ा नवाब तथा छोटे नवाब में संपत्ति का बँटवारा हो जाता है। बड़े नवाब तथा छोटे नवाब रिश्ते से भाई-भाई होते हुए भी एक-दूसरे को छोटा दिखाने के प्रयास में लगे रहते हैं। मटरुमल को बड़े नवाब खर्चा पूछता है तब मटरुमल बड़े नवाब को बताता है कि आपका खर्चा छोटे नवाब से कम है तो बड़े नवाब को मटरुमल पर क्रोध आता है। प्रस्तुत कथन देखिए - "हमारे पास उनसे ज्यादा खेत-खलिहान है, घोड़े हैं, तोप भी हमारी असली है, महल भी बड़ा है, अमला और खिदमतगार भी ज्यादा है। फिर उनका खर्चा हमसे ज्यादा कैसे हो सकता है? अगर तुम हमारी बेइज्जती करने पर आमदा हो तो हमें तुम्हारा इलाज करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा।"[1] अत: स्पष्ट है कि मनुष्य समाज में अपना स्थान निर्माण करने हेतु तथा बड़प्पन दिखाने हेतु दिखावटीपन कर रहा है। जिसमें वह अपना सबकुछ न्यौछावर कर रहा है।

गिरिराज किशोर ने 'घास और घोड़ा' नाटक में पण्डित ख्यालिराम एक गरीब घर का आदमी है और उसके घर पण्डित हजारीलाल बेटी का रिश्ता लेकर आता

---

1. गिरिराज किशोर - काठ की तोप - पृष्ठ - 12

है। पण्डित ख्यालिराम रिश्ता पक्का करने के लिए तथा पण्डित हजारीलाल को अमीरी दिखाने के लिए अपने घर में दूसरों के घर से मेज, कुर्सियाँ लाता है। उसका बेटा द्वारिका एल.एल.बी. के आखरी साल को है इसीलिए पण्डित हजारीलाल को ख्यालिराम कहता है कि आप द्वारिका को देखिए। वह खुद का बड़प्पन दिखाने के लिए हजारीलाल के सामने बड़ी-बड़ी बातें करता है। प्रस्तुत संवाद दृष्टव्य है - "नहीं लड़के को तो देख ही ले। आज लड़कों को पढ़ाने-लिखाने में कितना व्यय होता है। कमर टूट जाती है। फिर मेरे जैसा साधनवाला व्यक्ति तो...। आप बेटी के भविष्य के बारे में निर्णय लेने जा रहे है, यह तो देख ही लें कि जिस लड़के को बेटी सौपने जा रहे हैं, वह...।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि ख्यालिराम हजारीलाल की बेटी के साथ रिश्ता पक्का करने के लिए दिखावटीपन करता है। गिरिराज किशोर ने अपने नाटकों के माध्यम से खोकलेपन तथा दिखावटी की समस्या को स्पष्ट किया।

3.4.11 पूरानी और नई पीढ़ी के बीच संघर्ष की समस्या :

नई पीढ़ी तथा पूरानी पीढ़ी के विचारों में आज के वर्तमान परिवेश में कई मिलों का फासला आ गया है। पूरानी पीढ़ी अपने पूराने विचारों को नई पीढ़ी पर जबरदस्ती लादने की कोशिश करती है। किंतु नई पीढ़ी नए विचारों, नए मूल्यों को अपनाते हुए पूरानी पीढ़ी के विचारों के प्रति नकार दर्शाती है जिससे पूरानी तथा नई पीढ़ी के विचारों के बीच दरार निर्माण हो रही है।

गिरिराज किशोर ने 'नरमेध' नाटक में पूरानी और नई पीढ़ी के बीच संघर्ष की समस्या का चित्रण किया है। इस नाटक की मुख्य नारी पात्र तारा है। तारा के वन्दु रंजन और अंकन यह तीन बेटें हैं। इन्द्रराव उसका पति है। तारा का पूर्वप्रेमी नरेन है। उसकी बेटी वंती के साथ वन्दु प्यार करता है। वंती रंजन को सिर्फ अपना दोस्त मानती है। लेकिन रंजन वंती से प्यार करता है। इंद्रराव वन्दु और वंती की शादी के लिए

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' घास और घोडा - पृष्ठ - 153

अनुमति देता है लेकिन तारा पूराने विचारों की है। उसे जब पता चलता है कि वन्दु और रंजन वंती से प्यार करते हैं तो तारा वंती को ही भला-बुरा कहती है। प्रस्तुत कथन दृष्टव्य है - "वंती की शक्ल नरेन जैसे ही है। उसी तरह हँसती है। मजाक करती है। नीरा से मैंने कई बार कहा पर वह चुप हो गई। उसी की तरह आँसू भा लाती है। उनके पूरे चेहरे पर नरेन की आँखें नजर आने लगती है। मुझे यह सब अच्छा नहीं लगता। मैं नीरा की बात से सहमत हुँ, वंती नरेन नहीं हो सकती। वह अपने बाप की नकल करती है। नकली लोग मुझे बिल्कुल पसंद नहीं। मुझे लगता रंजन और वन्दु इसीलिए उलझ गए। क्या मेरी पीढ़िया नरेन की पीढ़िया को पीढ़ी-दर-पीढ़ी इसी तरह प्यार कर-करके टूटती रहेंगी? इसके लिए मैं ही दोषी हूँ। मैं ही...।"[1] तारा के यह विचार पूराने हैं। वह वंती को कहती है कि मुझे बहु चाहिए द्रौपदी नही। वन्दु को वंती के बारे में तारा का व्यवहार पसंत नहीं है उसी कारण वह इंद्रराव को चिट्ठी भेज देता है। स्पष्ट है कि यहाँ वन्दु और तारा के विचारों में संघर्ष हैं। जिसके परिणाम स्वरूप उनका परिवार बिखर जाता है।

3.4.12 चापलुसी की समस्या :

चापलुसी की समस्या वर्तमान परिवेश की कठिण समस्या बन गई है। मनुष्य अपने स्वार्थ हेतु दो लोगों में चापलुसी कर के खुद कमाता है और दूसरों में लढ़ाई छिड़ा देता है। इस समस्या को आज ज्यादा बढ़ावा मिल रहा है। चापलुसी की समस्या समाज में तेजी से फैल रही है।

गिरिराज किशोर जी के 'काठ की तोप' नाटक में गिरिराज किशोर ने चापलुसी की समस्या को चित्रित किया है। नाटक में चित्रित है कि बड़े लोगों के पास चापलुसी करनेवालों की भीड़ होती है। वे अपना शासन चापलुसों की खबरों पर ही करते हैं। वर्तमान युग की इस चापलुसी की समस्या पर गिरिराज किशोर ने तीखा व्यंग्य

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' नरमेध - पृष्ठ - 58

किया है। प्रस्तुत नाटक में चित्रित मटरूमल बड़े नवाब तथा छोटे नवाब की चापुलसी कर के अमीर हो जाता है। मुसाहिब मटरूमल का पर्दाफाश करता है। प्रस्तुत कथन दृष्टव्य है - "तुम्हारा क्या तुम तो दोनों तरफ से हाथ मारते हो।"[1] अत: स्पष्ट है कि समाज में लोग अपनी कामयाबी के लिए बड़े लोगों की चापलुसी करते हैं। समाज में चापलुसी की समस्या दिन-ब-दिन बढ़ रही है।

3.4.13 शोषण की समस्या :

प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक गरीबों तथा दलितों पर अन्याय होता आ रहा है।उच्च पेशा के लोग उनका शोषण करते हैं। आज भी निम्न वर्ग अन्याय, शोषण, पीड़ा और वेदना की चक्की में पीसता जा रहा है।आज अमीर लोग और अमीर बन रहे हैं और गरीब और ज्यादा गरीब हो रहा है। वर्तमान युग में भारत वैज्ञानिक दृष्टि से सबल बन रहा है तो दूसरी ओर गरीबी तथा दलितों का शोषण बढ़ रहा है।

'प्रजा ही रहने दो' नाटक में नाटककार किशोर ने शोषण की समस्या को चित्रित किया है। अमीर लोग अमीर बनते जा रहे हैं और गरीब-गरीब ही रह गए हैं। गरीब उनके यहाँ काम करते हैं लेकिन उनकी कोई इज्जत नहीं की जाती यह प्रमुख समस्या है। इस नाटक में कौरवों के दरबारों में पहारों को पहरा देने का काम है लेकिन उन्हें कोई भी आदर नहीं करता। पहला प्रहरी चौथे प्रहरी को अपनी समस्या बताता है। प्रस्तुत कथन देखिए - "क्यों नहीं हम लोग रात भर जागते हैं कोई आता है तो खड़े होते है, चला जाता है तो भी बैठ नहीं पाते। सोचते है 'कही लौट ना आये। प्रणाम करते हैं तो कोई उत्तर नहीं मिलता।"[2] इससे स्पष्ट होता है कि समाज में दो वर्ग है एक गरीब तथा दूसरा अमीर। गरीब काम करता है लेकिन अमीर लोग उसकी कद्र नहीं करतें बल्कि केवल उनका शोषण करते हैं। इसलिए आज शोषण की समस्या बढ़ गई है।

---

1. गिरिराज किशोर - काठ की तोप - पृष्ठ - 30
2. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो - पृष्ठ - 22

3.4.14 जाति भेद की समस्या :

आज भी नहीं कहा जा सकता है कि जाति-भेद की भावना पूरी तरह से मिट गई है। जाति-भेद या वर्ग-भेद को जन्म के आधार पर स्वीकार करना गलत है। क्योंकि मनुष्य यही एक जाति है। वृत्ति, स्वभाव, कर्म और गुण के आधार पर मानव ऊँच नीच हो सकता है। इसीलिए मनुष्य को अच्छे कर्म करने का प्रयास करना चाहिए। जाति का प्रभाव इतना गहरा और व्यापक है कि समाज में मनुष्य की पहचान उसके गुण, योग्यता, कर्म तथा व्यवसाय से न होकर जाति के आधार पर होती है।

'प्रजा ही रहने दो' नाटक में नाटककार गिरिराज किशोर ने जातिभेद की समस्या को चित्रित किया है। प्राचीन काल से लेकर आज तक जाँती-पाती का भेदभाव निरंतर चल रहा है। मनुष्य अपने स्वार्थ हेतु जाँत पात के भेद कर रहा है। प्राचीन काल में अपनी रोजी-रोटी के लिए मनुष्य व्यवसाय करता था। लेकिन बाद में उसी व्यवसाय के आधार पर जाँत-पाँत के वर्ग किए गए। प्रस्तुत नाटक में विदुर धृतराष्ट्र का भाई था। कुंती विदुर को युधिष्ठिर का पिता कहकर संबोधित करती है तब विदुर कुंती से मना करता है। प्रस्तुत संवाद देखिए - "भाभी उन संबंधों का बार-बार उल्लेख क्यों करती हो। जिन पर समाज का कोई अधिकार नहीं। राजा का पिता राजा ही हो सकता है, दासी-पुत्र विदूर नहीं।"[1] इससे स्पष्ट होता है प्राचीन काल से लेकर आज तक जाति-पाँति का भेदभाव निरंतर जारी रहा है। जातिभेद ही प्रमुख समस्या बन गई है। आज देश में दंगे फसाद भी जाति-पाति के कारण हो रहे हैं।

'घास और घोड़ा' नाटक में गिरिराज किशोर ने जातिभेद की समस्या को चित्रित किया है। मनुष्य जात-पाँत देखकर शादी के रिश्ते बनाने के प्रयास में रहता है। प्यार करते वक्त मनुष्य जाँत-पात नही देखता लेकिन परिवार अंर्तजातीय विवाह को अनुमति नही देता। इस नाटक में पण्डित हजारीलाल की बेटी जाठ ड्राइव्हर के साथ

---

1. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो - पृष्ठ - 16

भाग जाती है और कुछ दिनों के बाद वापस आ जाती है। पण्डित हजारीलाल अमीर होने के कारण अपनी बेटी के लिए उसकी जाति के गरीब पण्डित ख्यालिराम के घर का रिश्ता पसंद करते हैं लेकिन उसकी पत्नी को याने पण्डिताइन हजारीलाल को यह रिश्ता पसंद नहीं है। तो पण्डित हजारीलाल जाठ जाति के ड्राइव्हर को भला बुरा कहता है। प्रस्तुत संवाद देखिए - "तुम्हारे बेटी ने जाठ ड्राइव्हर चुना था, क्या वह उससे भी गया-गुजरा है।"[1]

3.4.15 राजनीतिक समस्या :

वर्तमान परिवेश में देश का ऐसा कोई भी भाग नहीं रह चुका कि वह राजनीति से अछूता है। सभी ओर यह समस्या पनप रही है। स्वातंत्र्यपूर्व काल में तथा स्वातंत्र्योत्तर काल में देश का राजनीतिक परिवेश अत्यंत धुँधला, भयावह है, विकृत और चिंता का विषय बन गया है। श्यामाचरण दुबे के अनुसार - "आज की राजनीति बहरों का संवाद बन गई है और अंधे हमें रास्ता दिखा रहे हैं। विश्व व्यवस्था के बदलते समीकरणों से साक्षात्कार करने में हम असमर्थ है।"[2] 'प्रजा ही रहने दो' नाटक में राजनीतिक समस्या को स्पष्ट किया गया है। इससे स्पष्ट है कि देश की बदलते राजनीतिक समस्या के कारण आम जनता का जीना मुश्किल हो गया है। जन मानस इस गंदी समस्या में फँस गया हैं। प्रस्तुत संवाद देखिए - "राजनीति का समय के बनने दो महाराज।"[3]

3.5.1 कुटनीति और धोखेबाजी की समस्या :

कूटनीति और धोखेबाजी कि समस्या जनता को तड़पा-तड़पाकर मार रही है। सत्ता प्राप्त करने के लिए तथा अपना स्थान ऊँचा रखने के लिए भ्रष्ट मूल्यों का प्रयोग ही आज राजनीति कहलाई जा रही है। बाबूराम गुप्त के अनुसार, "राजनीतिक

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' घास और घोड़ा - पृष्ठ - 148
2. डॉ.श्यामचरण दुबे - संक्रमण की पीड़ा - पृष्ठ - 108
3. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो - पृष्ठ - 25

भ्रष्टाचार ब्रिटिश साम्राज्यशाही से यहाँ कि शासन व्यवस्था करनेवाले राजनीतिक नेताओं और सरकार के करिंदों सभी को उत्तराधिकार के रूप में मिला।"[1] मनुष्य अपने कुटिल दाँव-पेच अपनाकर सत्ता हासिल करने की कोशिश कर रहा है। इसलिए मनुष्य किसी भी जाति, रिश्ता, हत्या, कुटनीति आदि की चिंता नहीं करता है। आज वर्तमान परिवेश में राजनीति से नीति लुप्त हो गई है और उसके स्थान पर कुटनीति आ गई हैं। डॉ.शशी जैकब के अनुसार - "दाँवपेच राजनीति का अस्त्र है।यह कुश्ती के दाँव-पेंचों से भी ज्यादा खतरनाक, बेरहम और हिंसात्मक है। राजनीति में उचित अनुचित का भेद किया भी नहीं जाता।"[2] इससे स्पष्ट होता है कि मनुष्य अपनी कामयाबी के लिए कुटनीति तथा धोखेबाजी को अपना रहा है। इसीलिए यह समाज की प्रमुख समस्या बन गई है।

'प्रजा ही रहने दो' नाटक में गिरिराज किशोर ने राजनीति में व्याप्त कुटनीति और धोखेबाजी की समस्या को चित्रित किया है। गिरिराज किशोर ने कुटनीति तथा धोखेबाजी पर तीखा व्यंग्य किया है। राजनीति में झूठी चालें, अन्याय, प्रलोभन, पाखंड, षड़यंत्र आदि का खुलेआम प्रयोग होता है। कुटिल राजनीति में सत्ता और स्वार्थ महत्वपूर्ण होता है। इस राजनीति में न कोई तत्त्व होता है और न सिद्धान्त। शासकों में साम्राज्य लिप्सा तो होता ही है, किन्तु सत्ता सुरक्षा के लिए वे मुश्किल चालें भी चलते हैं। प्रस्तुत संवाद देखिए - "मुझे कभी नहीं लगा की यहाँ मनुष्य है, उनकी भावनाएँ हैं। केवल यही लगता रहा कि यहाँ चालों के सिवा कुछ नहीं।"[3] इस नाटक में जुए का आयोजन धृतराष्ट्र की अनुमति से होता है। जुआ, एक खेल है लेकिन इसके पीछे कुटनीति तथा धोकेबाजी है। विदुर युधिष्ठिर से कहते हैं कि - "कोई राजा जब किसी राजदूत का निमंत्रण स्वीकार कर लेता है तो कुटनीति के क्षेत्र में उस राजदूत का सम्मान

---

1. बाबुराम गुप्त - उपन्यासकार नागार्जुन - पृष्ठ - 73, 42.
2. डॉ शशी जैकब - महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में वैचारिकता - पृष्ठ - 91
3. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो - पृष्ठ - 23

बढ़ जाता है। तुमने जुए का निमंत्रण स्वीकार कर के मेरा सम्मान ही बढ़ाया है।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि मनुष्य अपनी कामयाबी के लिए कुटनीति तथा धोकेबाजी को अपना रहा है और यह समाज की प्रमुख समस्या बन गई है।

'घास और घोड़ा' नाटक में गिरिराज किशोर ने कुटनीति और धोखेबाजी की समस्या को चित्रीत किया है। समाज की रक्षा कानून करता है। रक्षक अगर कुटनीती को अपनाकर अगर भक्षक बनता है तो समाज में अस्थिरता निर्माण हो जाती है। प्रस्तुत नाटक में प्रधान का बेटा जब रामनिरख का कत्ल करता है, तो उसे बचाने के लिए दरोगा प्रधान से रुपये लेने के लिए कुटनीति करता है। प्रस्तुत संवाद देखिए - "प्रधान जी मुझे तो दो-दो काम एक साथ करने पड़ेंगे। कातिल बेटे को बचाना है और उस बेगुनाह को फाँसी पर चढ़वाना। दो काम तो दो ही मिलकर कर सकते हैं। मैं और वह...।"[2] दरोगा रूपयों लेकर कुटनीति करता है और कुटनीति करने के लिए प्रधान को सुझाव भी देता है। प्रस्तुत कथन दृष्टव्य है - "प्रधान वकील मजबूत हो तो मुकदमा आधा जीता, गवाह भी मजबूत हो तो तीन चौथाई। जज तो एक चौथाई में ही रहते हैं। एक बात का ध्यान और रखना, उधर की पैरवी तगड़ी न होने पाए।"[3]

'चेहरे-चेहरे किसके चेहरे' इस नाटक में गिरिराज किशोर जी ने कुटनीति तथा धोखेबाजी की समस्या का चित्रण किया है। बड़े लोगों के कुटील चालों में आम आदमी हिस्सा लेते हैं लेकिन गरीब-गरीब रहता है और अमीर-अमीर ही बनता जाता है। इस नाटक में पात्र एक जब पात्र चार को कहता है महान चेहरा उस मुखौटे जैसा है। तभी चार उसे धमकाता है। प्रस्तुत संवाद देखिए - "बक्को मत। उनका चेहरा, उनका चेहरा है। तुमने उसे दिया? कब दिया? हा हा कौन देख पाया है जो तुम देख पाओगे। फिर भी तुम उनके चेहरे के बारे में बात कर रहे हो... यह उनका सदारायता

---

1. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो - पृष्ठ - 23
2. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' घास और घोड़ा - पृष्ठ - 170
3. वही - - पृष्ठ - 173

है। उन्होंने ही हमें चेहरा-मोहरा दिया। हम लोगों को 'हम लोग' बताया नहीं तो हम क्या थे। महान् लोग छोटों से छोटों को ही बड़ा बनाया करते है।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि अमीर लोग गरीबों को फँसाकर कुटनीति करके अपनी तरक्की करते हैं। राजनीतिक लोगों में कुटनीति की समस्या अधिक होती है।

'काठ की तोप' नाटक में नाटककार गिरिराज किशोर कुटनीति तथा धोखेबाजी की समस्या को चित्रित किया है। आज मानवीय संबंधों, भावनाओं एवं संवेदना का कोई अर्थ नहीं रहा है। आज छल कपट और शक्ति प्रदर्शन में अपने आप को सशक्त दिखाने के लिए विभिन्न प्रकार के हाथियारों के संग्रह करने की होड़ लगी है। इस नाटक में दो भाइयों को आपस में लड़ाया जाता है। इस नाटक में व्यापारियों को मटरूमल कहता है कि आप छोटे नवाब को हथियार बेचने के लिए तैय्यार है। व्यापारी मटरुमल को रिश्वत देकर कुटनीति करते हैं। प्रस्तुत संवाद देखिए - "हमें बाजार चाहिए। मुनाफा चाहिए। तुम जैसा दोस्त चाहिए, जो हमारे माल को खरीददार तक पहुँचा सके। तुम अपना हिस्सा लो हम अपना। बस्स...।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि मटरुमल जैसा व्यक्ति अपने फायदे के लिए व्यापारियों से रिश्वत लेकर कुटनीति करता है।

3.5.2 समाज में बढ़ता भ्रष्टाचार :

भ्रष्टाचार का सरल अर्थ है भ्रष्ट आचार। अर्थात किसी का ऐसा व्यवहार जो सामाजिक मूल्य, नियम तोड़कर स्वयं का 'स्वार्थ हेतु पूरा करने के लिए किया जाता हो। भ्रष्टाचार तो आर्थिक समस्या की कड़ी है। लेकिन भ्रष्टाचार आज शिष्टाचार बना हुआ है। उसका विरोध करना और व्यवस्था को बदलना आज-कल इन्सान के बस की बात नहीं। जब तक मानवी मन पर शुद्ध विचारों का प्रभाव नहीं पडेगा तब तक इस व्यवस्था में परिवर्तन नहीं आ जायेगा। भ्रष्टाचार के कारण समाज में नैतिक मूल्यों का

---

1. गिरिराज किशोर - 'चेहरे-चेहरे किसके चेहरे - पृष्ठ - 23
2. गिरिराज किशोर - 'काठ की तोप' - पृष्ठ - 29

ह्रास हो रहा है। डॉ.चमनलाल गुप्ता के अनुसार - "भ्रष्टाचार का अर्थ अपने पद अथवा दवाब में अनुचित काम करवाना, सत्ता एवं सामर्थ्य का दुरूपयोग करना है।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि इन्सान अपने स्वार्थ के लिए भ्रष्टाचार कर रहा है।यह समस्या फैलती ही जा रही है।

'घास और घोड़ा' नाटक में नाटककार गिरिराज किशोर जी ने भ्रष्टाचार की समस्या को चित्रित किया है।आज इन्सान स्वार्थी बन गया है। सभी जगह भ्रष्टाचार ने आतंक फैला दिया है। मनुष्य रुपयों में भ्रष्टाचार, राजनीति में भ्रष्टाचार, कानून में भ्रष्टाचार कर रहा है। कानून को समाज का रक्षक माना जाता है, अगर कानून की हिफाजत करनेवाले ही भ्रष्टाचार करेंगे तो आम आदमी जाएगा कहाँ? गिरिराज किशोर ने अपने नाटक की माध्यम से भ्रष्टाचार पर तीखा व्यंग्य किया है। इस नाटक में प्रधान का बेटा विमला के पति रामनिरख का कत्ल करता है। प्रधान अपने बेटे को बचाने के लिए दरोगा को रुपये देता है। एक गवाह अदालत में प्रधान के बेटे के खिलाफ बोलने का प्रयास करता है लेकिन उसे पेशकर रूपये देता है। तो दरोगा उस गवाह को धमकाता है। प्रस्तुत कथन देखिए - "देखो जी, नदी में रहकर मगरमच्छ से बैर नहीं चलेगा। जब प्रधान रुपया निकालकर देता है तो प्रधानजी...। जब प्रधान का मौका आया तो ईमानदार के किए धरे बन गए। उपर से सुनो या निचे से।अच्छी तरह सुन लो।जरा भी फिसलने की कोशिश की तो बम्बुकाठ बना दुँगा।अगर एक बार भी कहाँ कि प्रधान का कर्जा तुम्हारे उपर है तो फिर इस डंडे का कर्ज भी तुम्हें चुकाना पड़ेगा...।"[2] इससे स्पष्ट होता है कि गिरिराज किशोर ने दरोगा के माध्यम से भ्रष्टाचार की समस्या स्पष्ट की है। आज यह समस्या दिन-ब-दिन बढ़ती ही जा रही है।

'जुर्म आयद' नाटक में गिरिराज किशोर ने भ्रष्टाचार की समस्या का चित्रण किया है। इस नाटक में शर्मा नाम का पुलिस अपने अधिकार के बल पर

---

1. डॉ.चमनलाल गुप्ता - यशपाल के उपन्यास ः सामाजिक तथ्य - पृष्ठ - 118
2. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' घास और घोड़ा' - पृष्ठ - 119

भ्रष्टाचार करता है तथा एक नारी पर बलात्कार भी करता है। जब बलात्कार के बारे में एस एच ओ पूछता है, तब शर्मा एस.एच.ओ को बताता है कि नेता लोगों ने मेरी ईमानदारी से चिढ़कर रिपोर्ट दर्ज की थी। उस पर एस.एच.ओ. उसका पर्दाफाश करता है। प्रस्तुत कथन दृष्टव्य है - "जबरदस्ती करा भी दिया होगा? डॉक्टरी रिपोर्ट भी दुश्मनों ने लिख दी। शर्म करो... पुलिस को दरिंदों और वहशियों का पर्याय न बनाओ।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि समाज का रक्षक अगर भ्रष्ट आचरण करें तो सामान्य जनता को कौन न्याय दिलाएगा।इस समस्या को गिरिराज जी ने बड़ी बखुबी से स्पष्ट किया है।

'काठ की तोप' नाटक में नाटककार गिरिराज किशोर ने भ्रष्टाचार की समस्या को चित्रित किया है। आज देश-देशों में लड़ाई छिड़ाने के लिए अमरिका जैसे देश हाथियार बेचने के लिए तैयार हैं। इस नाटक में मटरुमल नाम का यह पात्र बड़े नवाब तथा छोटे नवाब के पास एक-दुसरे की चापुलसी करता है। उन दोनों की लड़ाई का फायदा उठ़ाता है। व्यापारिओं से मिलता है। व्यापारी ओं से रुपये लेकर उनके हाथियार बड़े तथा छोटे नवाब को बेचता है।

3.5.3 रिश्वतखोरी की समस्या :

समाज का रक्षण करनेवाला कानून है लेकिन वही कानून धनलोलुपता से भ्रष्ट होने के कारण चरित्रहिन, भ्रष्टाचारी और दायित्व का निर्वाह करने में असमर्थ रहा है। आज रिश्वतखोरी की समस्या बढ़ती ही जा रही है। डॉ हेतु भारद्वाज के इसी संदर्भ में लिखते है - "लोगों को लगत है कि एक काली छाया चारों ओर पसरी है जिसको पकड़ नहीं सकते।"[2]

---

1. गिरिराज किशोर - जुर्म आयद - पृष्ठ - 08
2. हेतु भारद्वाज - स्वातंत्र्योत्तर कहानियों में मानव प्रतिमा - पृष्ठ - 260

इससे स्पष्ट होता है कि समाज में रिश्वतखोरी की समस्या दिन-ब-दिन बढ़ रही है। इसीलिए सामान्य जनता को न्याय मिलना मुश्किल हो गया है।

'घास और घोड़ा' नाटक में रिश्वतखोरी की समस्या का चित्रण किया गया है। रिश्वत मनुष्य को अमानवीय बनाती है। रिश्वत लेने के कारण मनुष्य अंधा बनकर अमानवीय कार्य करता है। इस नाटक में प्रधान का बेटा जब विमला का पति रामनिरख का कत्ल करता है तो दरोगा प्रधान के घर आ जाता है। रुपयों की चाह रखकर दरोगा प्रधान को ड़राता है। प्रस्तुत संवाद देखिए - "प्रधान जी, मुझे तो दो-दो काम एक साथ करने पड़ेंगे। आपके कातील बेटे को बचाना और उस बेगुनाह को फाँसी पर लटकाना। दो काम दो ही मिलकर कर सकते हैं... मैं और वह...।"[1] जब प्रधान दरोगा को रूपयों की रिश्वत देता है तब दरोगा प्रधान के बेटे को छोठकर रामनिरख के साले पर जुर्म साबित करता है। प्रधान के बेटे के खिलाफ होनेवाले गवाह को उसे धमकाता है। प्रस्तुत संवाद देखिए - "देखो जी, नदी में रहकर मगरमच्छ से बैर नहीं चलेगा। जब प्रधान रुपया निकालकर देता है तो प्रधानजी-प्रधान जी। जब प्रधान का मौका आया तो ईमानदार के लिए धरे बन गए। उपर से सुनो या नीचे से। अच्छी तरह सुन लो। जरा भी फिसलने की कोशिश की तो बम्बुकाट बना दूँगा। अगर एक बार भी कहा कि प्रधान का कर्जा तुम्हारे ऊपर है तो फिर इस डंडे का कर्जा भी तुम्हे चुकाना पड़ेगा।"[2] अत: स्पष्ट है कि कानून के रक्षक दरोगा गुनाह करनेवाले लोगों से रिश्वत लेकर बेगुनाह को फँसाता है।

'केवल मेरा नाम लो' नाटक में रजनीकान्त के पत्नी की मौत हो जाने के कारण उसकी की मानसिक स्थिति बिगड़ जाती है। इसका फायदा उठाकर चामड़िया तथा उसकी पत्नी मिसेज चामड़िया रजनीकान्त को रिश्वत देकर मुख्यमंत्री से अपना काम कराना चाहते हैं। लेकिन रजनीकान्त को रिश्वत लेना ठिक नहीं लगता। प्रस्तुत कथन

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' घास और घोड़ा' - पृष्ठ - 170
2. वही - पृष्ठ - 179

दृष्टव्य है - "नहीं... नहीं... कभी नहीं... हो सकता। असम्भव! आप जा सकते हैं, जा सकते हैं। मजबूर हूँ... मेरे हाथ बाँधे है। आपके रुपयों की यह धमकी मुझे अपने निर्णय से नहीं हिला सकती।"[1] स्पष्ट है कि समाज में लोग अपने फायदे के लिए रिश्वत देने की कोशिश करते हैं।

गिरिराज किशोर ने 'काठ की तोप' नाटक में रिश्वतखोरी की समस्या का चित्रण किया है। इस नाटक में व्यापारीओं ने छोटे नवाब को हाथियार बेचने का करार किया। दोगला मटरुमल व्यापारिओं से पूंछता है कि क्या आप छोटे नवाब के विरोधी बड़े नवाब को हाथियार बेच सकते हैं। तो व्यापारी उसे कहता है - मिस्टर मटरुमल, हम किसकी तरफ है यह हम तय करेंगे। हमारी तरफदारी माल और बाजार के साथ हैं। यह हम तय करेंगे। व्यापारी मटरुमल को रिश्वत देकर अपने काम में शामिल करते है। प्रस्तुत संवाद देखिए - "हमें बाजार चाहिए। मुनाफा चाहिए। तुम जैसा दोस्त चाहिए, जो हमारे माल को खरीददार तक पहुँचा दे। तुम अपना हिस्सा लो हम अपना।"[2] इससे स्पष्ट होता है कि लोग अपने गैरकानूनी व्यापार में रिश्वत देकर मुनाफा कमाते हैं।

3.6 पारिवारिक समस्या :

परिवार समाज का एक घटक है। जिसे मानव ने आत्म संरक्षण, जीवन यापन हेतु स्थापित किया है। प्राचीन भारतीय परिवार कृषि प्रधान था। लेकिन आज के आधुनिक दौर में कृषि नौकरी, अनेक व्यवसाय तथा औद्योगिकता करनेवालों की संख्या बढ़ रही है। परिणामत: उद्योग ने लिया हैं। अत: परिवार का रूप भी बदलने लगा है। पारिवार के स्वरूप में परिवर्तन होकर परिवार विघटन की ओर बढ़ रहे हैं। किशोर जी ने अपने नाटकों में अनेक पारिवारिक समस्याओं को स्पष्ट किया है।

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' केवल मेरा नाम लो - पृष्ठ - 260
2. गिरिराज किशोर - काठ की तोप - पृष्ठ - 29

3.6.1 टूटते पारिवारिक संबंधों की समस्या :

कोई भी मनुष्य अपना जीवन अपने परिवार के साथ जीता है। परिवार में ही मनुष्य संस्कारित बनता है। इन्हीं संस्कारों के कारण उसको मनोविकास एवं स्वास्थ्य तथा सुंदर जीवन का विकास होता है। अगर यह संस्कार ठिक तरह नहीं होते हैं। तो मनुष्य परिवार सापेक्ष जीवन नहीं जी सकता। वहीं से परिवार के प्रति उसका अलग नजरिया होने लगता है। परिवार और उसके विचारों में जब दरारें निर्माण होती हैं तो वे पारिवारिक संबंध टूटने लगते हैं। डॉ दिनेशचंद्र वर्मा लिखते है "परंपरा एवं नवीनता के द्वंद्व, आर्थिक वैषम्य, वैचारिक मतभेद, पारस्पारिक समन्वय और सामंजस्य अभाव और मानवीय मूल्यों के ह्रास ने, संयुक्त परिवार पद्धति पर भयंकर प्रहार किया है। फलस्वरूप संयुक्त परिवारों के विघटन की प्रक्रिया प्रारंभ हो गई है।"[1] स्पष्ट है कि परिवार के लोगों के विचारों में दरार आने के कारण पारिवारिक संबंध टूटने लगे हैं। परिणामत: सिर्फ दाम्पत्य जीवन तक ही परिवार की व्याख्या सीमित हो रही है।

'नरमेध' नाटक में गिरिराज किशोर ने पारिवारिक समस्याओं को चित्रित किया है। प्रस्तुत नाटक की मुख्य समस्या, पारिवारिक समस्या है। इस नाटक का मुख्य नारी पात्र तारा है जिसका बेटा रंजन वंती से प्यार करता है। जब इस बात का पता तारा को चलता है तो तारा वंती को बदचलन समझती है। इसीलिए तारा का बड़ा बेटा वन्दु और वंती के विवाह का विरोध करती है। जिसके कारण तारा के परिवार की स्थिति बिगड़ जाती है। वन्दु घर छोड़कर अमरिका चला जाता है। वंती अपनी शादी का कार्ड वन्दु को भेज देती है। वन्दु अपने पिता इंद्रराव को चिठ्ठी भेज देता है। वह चिठ्ठी तारा के हाथ लग जाती है। तारा वह चिठ्ठी पढ़कर खुद को दोषी मानकर खुदखुशी करने का प्रयास करती है। रंजन अंकन को बताता है कि उस चिठ्ठी के कारण ही माँ घर छोड़कर चली गयी होगी। रंजन अंकन को चिठ्ठी पढ़कर बताता

---

1. डॉ दिनेश चंद्र वर्मा - समकालीन हिंदी नाटक एवं नाटककार - पृष्ठ - 13

है। प्रस्तुत कथन देखिए - "मैं यही सोचकर अमरिका चला आया था कि शायद मेरे पीछे माँ वंती के बारे में राय बदल देगी। लेकिन उनके लिए यह हमेशा मुश्किल रहा है।"[1] स्पष्ट है कि विचारों में संघर्ष होने के कारण पारिवारिक संबंध टूटते जा रहे हैं।

किशोर जी के 'प्रजा ही रहने दो' नाटक में युधिष्ठिर जुए में द्रौपदी को दाँव पर लगाकर हार जाता है। कौरव द्रौपदी के वस्त्र निकालकर द्रौपदी को अपमानित करते हैं और कौरवों की पत्नियाँ उसे देखकर हँसती हैं। द्रौपदी को अपने परिवार के कारण अपमानित होना पड़ता है प्रस्तुत कथन देखिए- "परायी बेटी बहू होती है और अपनी बेटी, बेटी।"[2] इससे स्पष्ट होता है कि परिवार के लोग जब परिवार के व्यक्ति को किसी वस्तु की तरह दाँव पे लगातें हैं तब वह व्यक्ति अपने आप को परिवार से अलग समझने लगती है।

गिरिराज किशोर जी के 'केवल मेरा नाम लो' नाटक में रजनीकान्त पत्नी रागिनी का स्वर्गवास हो जाने के कारण उसकी मानसिक स्थिति बिगड़ जाती है। उसकी एक बेटी जिसका नाम सुलभा है। सुलभा रागिनी की तरह दिखाई देने के कारण वह सुलभा को ही रागिनी मानता है। लेकिन सुलभा जब उसे पापा कह कर पुकारती है तब वह उस पर चिल्लाता है। इसलिए सुलभा रजनीकान्त के इस व्यवहार से घबरा जाती है। वह अपनी माँ को याद करती है। प्रस्तुत संवाद देखिए - "पापा कितने अच्छे थे। कितना प्यार करते थे... अब उनके व्यवहार से लगता है उन्होंने कभी किसी को प्यार ही नहीं किया। बहुत नाराज...घृणा का भाव हर समय उनके चेहरे पर बना रहता है। बताओं मैंने ऐसा क्या किया... क्या किया...।"[3]

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' नरमेध - पृष्ठ - 36
2. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो - पृष्ठ - 54
3. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' केवल मेरा नाम लो - पृष्ठ - 250, 251

इससे स्पष्ट होता है कि सुलभा मानसिक पीड़ा से त्रस्त पिता से पीड़ित हो जाती है। समाज में पारिवारिक संबंध टूटते जा रहें हैं।

'जुर्म आयद' नाटक में नाटककार गिरिराज किशोर ने पारिवारिक समस्या का चित्रण किया है। इस नाटक का मुख्य नारी पात्र उम्मेदी देवी है। जो अपनी पारिवारिक समस्या से पीड़ित होकर अपनी बेटी के साथ खुदखुशी करती है, लेकिन वह बच जाती है और दुर्भाग्य से उसके बेटी की मौत हो जाती है। उस कारण उम्मेदी पर खुदखुशी करने तथा बेटी का कत्ल करने के जुर्म में दफा **302** और **307** के तहत केस चलता है। उम्मेदी अपने परिवार से पीड़ित थी। उसे एक बेटी हो गई। तो उसे लगता है कि बेटी होने के बाद हालात संभल जाएंगे। लेकिन उसका पति बेटी का बाप होने से इन्कार कर देता है। इस बात को उम्मेदी सह नहीं सकती और वह खुदखुशी करने का निर्णय लेती है। उसने सोचा कि मेरी मृत्यु के बाद परिवारवाले बेटी के साथ किस तरह व्यवहार करेंगे। इस कारण उसने बेटी को भी साथ लिया। प्रस्तुत संवाद देखिए - "इसके पास दो ही रास्ते थे। या तो शेरनी बनकर उनका खुन पी जाती । उस हाल में भी उसके लिए दफा **307** थी। या फिर वही करती जो उसने किया।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि परिवार के लोग ही उसे से पीड़ित करें तो उस व्यक्ति को परिवार के प्रति लगाव नहीं रहता। इसलिए वे खुदखुशी का रास्ता चुनती हैं।

किशोर जी के 'काठ की तोप' नाटक में बड़ा नवाब तथा छोटा नवाब भाई-भाई है। उन दोनों में सम्पती का बँटवारा हुआ हैं। लेकिन बडे तथा छोटे नवाब एक-दुसरे को छोटे दिखाने का प्रयास करते रहते हैं। भाई-भाई होकर भी आपस में लढ़ाई करने के लिए हाथियार खरीदते हैं। छोटा नवाब बड़े नवाब पर हमला करता है। उसमें बड़े नवाब के दरबारी तथा बड़ा नवाब घायल हो जाता है। सत्ता बढ़ाने के लिए छोटे नवाब बड़े नवाब के साथ लड़ाई करने के लिए कर्जा लेकर व्यापारिओं से

---

1. गिरिराज किशोर - जुर्म आयद - पृष्ठ - **22**

हाथियार खरीदता है। प्रस्तुत नाटक में भाई-भाई के टूटते पारिवारिक संबंधों का चित्रण हुआ है। प्रस्तुत संवाद देखिए - "यही है वह दखल जिसकी शाखों पर बहिश्त है हर मौसम में यह फलता फूलता है। कितना छतनार और सदाबहार है बड़े नवाब ने हमारे हक को तर्क करके अपना हक जमा लिया। यह दरख्त हमारी जान है।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि पारिवारिक संघर्ष के कारण परिवार के टुकड़े हो रहे हैं और रिश्ते टूट रहे हैं।

3.6.2 बदलते रिश्तों की समस्या :

पारिवारिक समस्याओं से कोई भी इन्सान नहीं छुटा है। आज टूटते दाम्पत्य जीवन की समस्या प्रमुखता से दिखाई देती है। इस संदर्भ में सावित्री देवी वर्मा लिखती है - "बाधाओं से जूझते हुए आगे बढ़ने का नाम ही जिंदगी है। सुखी परिवार ही, सुखी व समृद्धी समाज का निर्माण करने में सफल होते हैं। पारिवारिक जीवन तभी सफल होता है जब कि दंपति समझदार हो और वे अपने कर्तव्य निभाने की भरसक चेष्टा करते रहें। आजकल मध्यम वर्ग में पारिवारिक जीवन की आधारशीला हिली हुई प्रतित होती हैं क्योंकि दुर्बल चरित्र, स्वार्थ, असहयशिलता ने उन्हें पारिवारिक जिम्मेदारियाँ सँभालने को कहा है। पर देखा जाए तो उनके चरित्र की अपनी कमजोरी है। जो उनके वैवाहिक जीवन को सफल नहीं बना पाती।"[2]

इससे स्पष्ट होता है कि आधुनिक तथा पूराने विचारों में संघर्ष के कारण तथा अपनी कामयाबी के लिए मनुष्य रिश्ते नाते भूल रहा है। बदलते रिश्तों की समस्या बढ़ती जा रही है।

'नरमेध' नाटक में नाटककार गिरिराज किशोर ने टूटते दाम्पत्य जीवन को चित्रित किया है। इस नाटक में तारा जब वन्दु और वंती के विवाह का विरोध करती है तब पारिवारिक संबंधों में अलगाव आ जाता है। वन्दु तारा के इस विरोध के

---

1. गिरिराज किशोर - काठ की तोप - पृष्ठ - 17
2. सावित्रीदेवी वर्मा - पारिवारिक समस्याएँ दो शब्द - पृष्ठ -

AR LIBRARY ... SHIVAJI ... KAPUR

कारण अमरिका चला जाता है। वन्दु का मँझला भाई रंजन वंती से प्यार करता है लेकिन वंती उसे अपना दोस्त मानती है। इसी कारण वह भी दु:खी होता है। तारा को ऐसा लगता है कि उसका पूर्व प्रेमी नरेन ने उसे प्रतिशोध लेने के लिए इंद्रराव से संबंध बढ़ाए और उसने ही वन्दु और वंती को शादी करने के लिए प्रोत्साहित किया। तारा के इसी व्यवहार के कारण उसके परिवार में तनाव निर्माण हो जाता है। प्रस्तुत संवाद देखिए - "अपने बच्चों को जिस आग में मैंने झोंक दिया है, इन्द्र चाहते तो बचा लेते अगर वे वंदु और वंती के शादी की लिए मुझे मजबूर करते तो क्या में मना कर देती? परिवार में वे हमेशा बाहरी आदमी की तरह रहते हैं।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि परिवार के लोगों में और तारा के विचारों में दरार निर्माण होने के कारण तारा परिवार के प्रति नाराजगी व्यक्त करती हैं। आजकल ज्यादा मात्रा में यह समस्या दिखाई देती है।

किशोर जी के 'प्रजा ही रहने दो' नाटक में कर्ण को विदुर जब अपमानित करते हैं तब कर्ण कुरूवंशीयों का पर्दाफाश करता है। प्रस्तुत संवाद दृष्टव्य है - "कुरूवंशियों, इस कुलीनता के पाखंड ने ही तुम्हें वीर्यहिन बना डाला है। सुन सकते हो तो सुनो। नियोग पंड़ित, तुम्हारे भीष्म भी अवश्य जानते होंगे। तुम्हारें इसी कुरूवंश की यशस्वी और चरित्रवान बहू कुंती ही मेरी कुमारी माँ है। तेजस्वी सुर्य मेरे पिता है।"[2] इससे स्पष्ट होता है कि परिवार के लोग होकर भी वे कर्ण को अपमानित करते हैं इसलिए कर्ण परिवार के लोगों के प्रति विद्रोह करता है। कुंती अपने बच्चे को लोक लज्जा के कारण जन्म के उपरांत नदी में छोड़ देती है। उसी बच्चे को सारथी संभालता है वही कर्ण है। कर्ण कुंती के इस व्यवहार से नफरत करता है। वह सुयोधन से कहता है कि एक-एक पांडव का वध नहीं किया तो मेरा नाम कर्ण नहीं। अत: यहाँ टूटते रिश्तें स्पष्ट होते हैं।

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' नरमेध पृष्ठ - 52
2. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो - पृष्ठ - 72

'घास और घोड़ा' नाटक में नाटक में पंडित हजारीलाल अपनी बेटी का रिश्ता पंडित ख्यालिराम के बेटे के साथ करना चाहता हैं। लेकिन हजारीलाल की पत्नी को यह रिश्ता पसंद नहीं है। पंडित हजारीलाल बेटा और बेटी में भेदभाव करता है। एक तरफ देश विकसीत बनने जा रहा है तो दूसरी तरफ रिश्तों में बदलाव आ रहा है। वह पिता होकर भी अपनी बेटी के बारे में गलत शब्दों का प्रयोग करता है। प्रस्तुत कथन दृष्टव्य है - "अच्छा पर तुम्हारी बेटी को क्या रखेगा? लडकियाँ बरतन भांडी की तरह नहीं होती कि टाँका लगाकर इस्तेमाल करने लगो।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि समाज में आज भी अपनी औलाद को खुद की मर्जी से शादी करने का हक नहीं दिया जा रहा है। इस कारण रिश्तें बदलते जा रहे हैं।

गिरिराज किशोर के 'केवल मेरा नाम लो' नाटक में रजनीकान्त का अपनी पत्नी रागिण्नी की मृत्यु के कारण मानसिक स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। उसकी बेटी सुलभा रागिनी की तरह दिखती है इसलिए रजनीकान्त उसे अपनी पत्नी के रूप में देखता है। सुलभा जब उसे पापा कहकर पुकारती है तो रजनीकान्त सुलभा पर उखड जाता है। प्रस्तुत संवाद देखिए - "फिर कहा पापा... भुल जाओ, इस मनहूस संबोधन को, भुल जाओ। रागिनी की तरह मुझे सिर्फ रजनी कहकर पुकारो...।"[2] इससे स्पष्ट होता है कि रजनीकान्त पिता होकर भी अपनी बेटी को पत्नी के रूप में देखता है। बदलते रिश्तों की यह समस्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है।

'गिरीराज किशोर ने 'जुर्म जायद' नाटको में बदलते रिश्तेां की समस्या को स्पष्ट किया है। जब मनुष्य मोह, माया, ईर्ष्या में फँस जाता है तब वह सब रिश्ते-नाते तोड़ देता है। इस नाटक में उम्मेदी देवी की शादी हो जाने पर ससुरालवाले उस पर अत्याचार करते हैं। समाज में बहू के प्रती होनेवाले दृष्टिकोन में अभी तक कोई बदलाव

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' घास और घोड़ा - पृष्ठ - 148
2. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' केवल मेरा नाम लो - पृष्ठ - 283

नहीं आया है। बहू तथा बेटी के प्रति अलग-अलग व्यवहार दिखाई देता है। उम्मेदी दस साल तक ससुरालवालों का अत्याचार सहती है। जब उसे बेटी हो जाती है, तो उसे लगता है कि बेटी होने के बाद तो अत्याचार खत्म होगा। लेकिन उम्मेदी के पति अपनी बेटी का बाप होने से ही इन्कार करता है। उसका पति उस पर बदचलन होने का आरोप करता है। उम्मेदी ने जिसे अपना जीवन समर्पित किया वही उस पर शक करता है। इसी कारण रिश्तों में दरार आ जाती है। जस्टिश शिवचरण का दामाद भी जस्टिश शिवचरण की बेटी आशा को अपने बॉस को खुश करने के लिए पार्टी में साथ चलने के लिए कहता है। वह एक पति होकर भी केवल स्वार्थ से अंधा होकर पत्नि की इज्जत बेचने पर तुल जाता है। प्रस्तुत कथन देखिए - 'बीवी की जगह पति के चरणों में होती है। जिधर उसके चरण चल पड़े, उधर ही पत्नी का शीश झुकना चाहिए।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि आज रिश्तें नातों में बदलाव आ रहा है और मानवीयता खत्म होने लगी है।

गिरिराज किशोर ने 'काठ की तोप' नाटक में दिखाया गया है कि मनुष्य खुद को बलशाली दिखाने के लिए अपने भाई पर भी हमला कर के रिश्ते तोड़ डालता है और अपने भाई से अमीर होने की ईर्ष्या में लगा हुआ है। इसमें बड़े और छोटे नवाब भाई-भाई है लेकिन वे एक दूसरे को छोटा दिखाने का प्रयास करते रहते हैं। बड़े नवाब खर्चा ज्यादा दिखाने के लिए मट रुमल को धमकाता है। प्रस्तुत कथन देखिए - "आखिर हुआ क्या? क्या हमारा चिठ्ठा छोटे नवाब के चिठ्ठे से अभी भी कम है?"[2] इससे स्पष्ट होता है कि भाई-भाई के रिश्ते में ईर्ष्या के कारण कड़वाहट आ गयी है। अत: स्पष्ट है कि बदलते रिश्तों की समस्या बढ़ती जा रही है।

3.6.2.1 माता-पुत्र के टूटते संबंध की समस्या :

प्राचीन काल में अपने माता-पिता के लिए पुत्र कोई भी कठीन काम करने के लिए तैयार था, कोई, पुत्र अपने माता-पिता की आज्ञा के खिलाफ नहीं जाता था।

---

1. गिरिराज किशोर - जुर्म आयद - पृष्ठ - 35, 36
2. गिरिराज किशोर - काठ की तोप - पृष्ठ - 13

लेकिन आज के वर्तमान युग में यह स्थिति बदल गई है। मनुष्य अपने परिवार से ज्यादा खुद का विचार कर रहा है। माता-पुत्र के विचार अलग-अलग होने के कारण पारिवारिक रिश्तों में दरार आ गई है।

किशोर जी के 'नरमेध' नाटक में माता-पिता-पुत्र के टूटते संबंधों को चित्रित किया है।इसमें तारा के पुत्र वन्दु और रंजन वंती से प्यार करते हैं। इसलिए तारा वंती को बदचलन मानते हुए वन्दु और वंती की शादी का विरोध करती है। वन्दु अपने माँ के व्यवहार से निराश होकर अमरिका चला जाता है। इधर वंती की शादी दूसरे लड़के के साथ तय हो जाती है इसलिए वंती अपनी शादी का कार्ड वन्दु को अमरिका भेज देती है। इस कारण वन्दु अपने माँ के प्रति नाराजगी व्यक्त करते हुए अपने पिता इंद्रराव को चिठ्ठी लिखता है। प्रस्तुत चिठ्ठी का कथन दृष्टव्य है-"लगता है ईश्वर और माँ के बीच एलायन्स है।ईश्वर ने माँ की बात तुरंत मान ली।मैं यही सोचकर अमरिका चला आया था कि मेरे पीछे माँ राय बदल देंगी लेकिन उनके लिए यह हमेशा मुश्किल रहा।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि माँ बेटे के विचारों के बीच दिन-ब-दिन दरार बढ़ती जाने के कारण माता-पुत्र के संबंध टूटते जा रहें हैं।

3.6.2.2 पति-पत्नी के टूटते संबंधों की समस्या :

पारिवारिक जीवन में कभी संबंध बनते हैं तो कभी बिगड़ते हैं। संबंधों का बनना माधुर्य एवं स्नेह का प्रतिक होता है तथा पारिवारिक संबंधों का टूटना तिरस्कृत एवं घृणा का प्रतिक है। वर्तमान समाज में पारिवारिक संबंध बनते-बनते बिखरते हैं। लेकिन प्रतिकूल परिस्थितियों में भी पति-पत्नी का मधुर संबंध बना रहे इसके लिए कोशिश करनेवाला परिवार आदर्श परिवार होता है।

'नरमेध' नाटक में गिरिराज किशोर ने पति-पत्नी के टूटते संबंधों की समस्या को चित्रित किया है। प्रस्तुत नाटक में पति-पत्नी के बदलतें विचारों की समस्या

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' नरमेध - पृष्ठ - 36

को चित्रित किया है। पति-पत्नी के विचारों में जब विरोध दिखाई देता है तो वहीं पति-पत्नी के संबंध टूटने लगते हैं। प्रस्तुत नाटक में तारा और इन्द्रराव के माध्यम से पति-पत्नी के टूटते संबंधों का चित्रण किया है। इंद्रराव वन्दु और वंती की शादी के लिए अनुमति देता है। लेकिन तारा उसकी पत्नी इस शादी का विरोध करती है। इस कारण तारा और इंद्रराव के विचारों में अंतर दिखाई देता है। तारा इंद्रराव के बारे में नीरा से कहती है। प्रस्तुत कथन देखिए - "नीरा तू इन्हें समझा, इतना जुल्म न करें। मेरी गलती हो तो मुझे मारे मगर खामोश न रहें।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि समाज में आज पति-पत्नी संबंध टूटते जा रहे हैं। इस समस्या के कारण पारिवारिक वातावरण दूषित हो गया है।

'प्रजा ही रहने दो' नाटक में पति अपनी पत्नी के साथ विचार-विमर्श किए बिना उसे जुए के दाँव पर लगाता है। इस नाटक में द्रौपदी के पाँच पति हैं लेकिन उनसे एक ने भी द्रौपदी की परवाह नहीं की। जुए के खेल में किसी वस्तु की तरह उसे दाँव पर लगाया जाता है। मनुष्य होने के नाते उसकी भावनाओं की परवाह नही की जाती। पांडवों के कारण द्रौपदी को कौरवों से अपमानित होना पड़ता है। द्रौपदी युधिष्ठिर को अपनी व्यथा बताती है। प्रस्तुत कथन देखिए - "जब तक मेरे अपमान का कोई प्रतिशोध नहीं लेता तब तक मेरा कोई पति है न भाई न ससुर।"[2] इससे स्पष्ट होता है कि द्रौपदी को उसके परिवार से कोई लगाव नही रहा। क्योंकि उसके परिवार ने उसका किसी मूल्यहीन वस्तु की तरह इस्तेमाल किया था।

गिरिराज किशोर ने 'घास और घोड़ा' नाटक में स्पष्ट किया है कि मनुष्य जब मोह-माया के जाल में फँसता है तो उसके विचारों में बदलाव आ जाता है।उसके विचार उसके परिवार के साथ भी नहीं मिलते। पति-पत्नी के संबंध जब बिघड़ जाते हैं तो दोनों एक जगह नहीं रह पाते। प्रस्तुत नाटक में जज की बेटी जज से मासूमियत से

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' नरमेध - पृष्ठ - 53
2. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो - पृष्ठ - 57

फाँसी देने को कहती है। इस कारण जज उसे डाँटता है। इसलिए उसकी बेटी रोती है। उसका रोना बंद करने के लिए जज उसे कहता है - 'तुम्हें भी फाँसी दूँगा' यही वाक्य उसकी पत्नी सुनती है और वह पति से झगड़ा करती है। प्रस्तुत कथन दृष्टव्य है - "बाप होकर बेटी को फाँसी दोगे। देखो जी आज से कभी भी ऐसी बातें की तो मैं आग लगाकर मर जाऊँगी।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि पति-पत्नी के विचारों में विरोध निर्माण होने पति-पत्नी के संबंध टूटने लगे हैं।

'जुर्म आयद' नाटक में नाटक में उम्मेदी का पती उम्मेदी पर अत्याचार करता है। वह उम्मेदी के बेटी का बाप होने से इन्कार करता है। यह भीषण समस्या है। पत्नी अपने पति के लिए अपना सारा जीवन समर्पित करती है और पति उस पर अत्याचार करता है। उसे बदचलन कहकर अपमानित करता है। इसलिए उम्मेदी अपनी बेटी के साथ खुदखुशी करती है। प्रस्तुत कथन देखिए - "पति ने बच्ची का बाप होने की सच्चाई तक को नकार दिया। जब तक गलाजत अपने तक महदूद थी, उम्मेदी देवी चुपचाप सह रही थी। मासूम बेटी तक पहुँची तो वह अपना संतुलन खो बैठी।"[2] स्पष्ट होता है कि पति अगर पत्नी पर शक करता है तो पति-पत्नी के संबंध टूट जाते हैं।

3.6.3 वृद्ध लोगों की समस्या :

मनुष्य के जीवन में अनेक पीड़ा, यातना, समस्याएँ होती हैं। ये समस्याएँ बुढ़ापे में और भी बढ़ जाती हैं। बुढ़ापे में जब किसी के बेटे की मृत्यु हो जाती है तो उन वृद्धों का आधार ही नष्ट हो जाता है। वृद्धों का आधार तथा उसकी लाठी उसकी संतान होती है। लेकिन वही सहारा टूट जाय तो वृद्धों को जीना मुश्किल हो जाता है। उम्र के कारण काम करना या परिवार का आधार बनना वृद्धों को कठीण हो जाता है।

'प्रजा ही रहने दो' नाटक में गिरिराज किशोर ने वृद्ध लोगों की समस्या को चित्रित किया है। मनुष्य को जन्म से लेकर मृत्यु तक हर समस्या का सामना करना

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' घास और घोड़ा - पृष्ठ - 185
2. गिरिराज किशोर - जुर्म आयद - पृष्ठ - 22

पड़ता है। वृद्धों का आधार युवा पीढ़ी होती है। इस नाटक में पांडव तथा कौरवों के बीच युद्ध शुरू होता है। दोनों तरफ की सेना मारी जाती है। युधिष्ठिर जब विजयी होकर हस्तिनापुर में प्रवेश करते हैं तो उसके साथ बचे हुए सैनिक घायल होकर आते हैं। लेकिन हस्तिनापुर में आनंद मनाने के लिए भी कोई नहीं बचता। बचते हैं बच्चें, वृद्ध लोग और स्त्रियाँ। वृद्धों का सहारा उनके बेटे होते हैं। बेटे की मृत्यु के कारण वृद्धों को ही उस परिवार का सहारा बनना पड़ता है। प्रस्तुत कथन देखिए - "सब कुछ समाप्त हो गया। सौ के सौ पुत्रों को युद्ध लील हो गया।"[1] अत: स्पष्ट है कि वृद्धों का आधार उनकी संतान होती है। अगर संतान की मौत हो जाती है तो वृद्धों का जीना मुश्किल होता है।

3.6.4 विवाह की समस्या :

भारतीय मनुष्य के जीवन की सही शुरुवात विवाह से होती है। समाज का विकास तथा स्थैर्य विवाह पर आधारित है। प्राचीन हिंदू ग्रंथों में विवाह को महत्त्वपूर्ण स्थान है। मनुष्य अपने सुंदर जीवन की शुरूवात विवाह से करता है। विवाह में जीवन साथी के साथ आचार-विचारों का मिलना आवश्यक है। अगर आचार-विचारों का जुड़ना असंभव हो जाता है तो समस्या निर्माण हो जाती है। योगेश कुमारी सुरी ने लिखा है, "विवाह समाज से मान्यता प्राप्त वह संस्था है जो किसी प्रथा या नियम के अनुसार दो या अधिक स्त्री-पुरुषों के यौन-संबंधों को नियमीत तथा नियंत्रित करती है।"[2] 'घास और घोड़ा' में पं हजारीलाल की पत्नी पं ख्यालीराम के बेटे द्वारीका के साथ अपनी बेटी के रिश्तें को नकारती है तब पं हजारीलाल उसे डाँटता है। प्रस्तुत संवाद देखिए - खैर... तुम बैठी सोचती रहो, मैं ख्यालीराम के बेटे से सगई पक्की करने जा रहा हूँ।"[3] इससे स्पष्ट होता है कि समाजमान्य नियम एवं रीति-रिवाजों से किया गया विवाह समाज स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है।

---

1. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो - पृष्ठ - 98
2. योगेश कुमारी सुरी - यशापाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ - पृष्ठ - 78
3. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' घास और घोड़ा - पृष्ठ - 148

3.6.4.1 प्रेम विवाह की समस्या :

वर्तमान परिवेश में प्रेम विवाह एक समस्या बन रही है। इसमें अंर्तजातीय विवाह ज्यादा होते हैं। मनुष्य प्यार करते समय किसी की जात-पात नहीं देखता। प्यार के ढाल पर शादी तो करता है लेकिन समाज उसे जगह-जगह अपमानित करता है। परिवार तथा समाज के लोग उससे रिश्ते तोड़ देते हैं। मनुष्य आज वर्तमान युग में होकर भी परंपरागत विचारधाराओं तथा जात-पात के नियमों के बंधन में अटका हुआ है। प्रेम विवाह को समाज या परिवार अनुमति नहीं देता। आज भी कम-से-कम मात्रा में प्रेम विवाह होते हैं और जो विवाह होते हैं वह जादा दिन तक टिक नहीं पाते। आज भी प्रेम विवाह के बारे में समाज की मानसिकता नहीं बदली है। प्रेम विवाह होने के बाद भी विचारों में संघर्ष होने के कारण दोनों एक-दुसरें से खपा होकर एक दूसरे से दूर भागना चाहते हैं।

'नरमेध' इस नाटक में गिरिराज किशोर ने प्रेम विवाह की समस्या को प्रमुख रूप में चित्रित किया है तथा प्रेम विवाह का विरोध करने वाले समाज पर इस नाटक के माध्यम से तीखा व्यंग्य किया है। तारा इस नाटक का मुख्य नारी पात्र है। तारा ने इन्द्रराव से शादी करने से पूर्व नरेन से प्यार किया था। लेकिन उसकी शादी नरेन से न होने के कारण प्यार की ओर देखने की उसकी नजर बदल जाती है। उसी नरेन की बेटी वंती से उसका बेटा वन्दु प्यार करता है। इन्द्रराव वन्दु और वंती की शादी के लिए अनुमति देता है। लेकिन तारा का दूसरा बेटा रंजन वंती से प्यार करने लगता है, वंती रंजन को सिर्फ अपना दोस्त मानती है। यह बात तारा को पता होने के कारण तारा वन्दु और वंती की शादी को अनुमति नहीं देती। इस कारण वन्दु तारा के प्रति नाराजगी व्यक्त करता है। प्रस्तुत कथन दृष्टव्य है - "मैं यही सोचकर अमरिका चला आया था कि शायद मेरे पीछे माँ वंती के बारे में अपनी राय बदल देगी। लेकिन उनके लिए यह हमेशा मुश्किल रहा है।"[1]

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' नरमेध - पृष्ठ - 36

इससे स्पष्ट होता है कि प्रेम विवाह की समस्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है।

किशोर जी के 'घास और घोड़ा' नाटक में पण्डित हजारीलाल की बेटी जाठ जाति के ड्राइव्हर के साथ भाग जाती है। पण्डित हजारीलाल परंपरागत विचार तथा जाँत-पाँत माननेवाला व्यक्ति है। वह प्रेम विवाह के विरुद्ध है। जब उसकी बेटी कुछ दिनों के बाद अपने प्रेमी को छोड़कर आती है तब पण्डित हजारीलाल को लगता है कि बेटी के बुरे कारणामों के कारण घर की इज्जत चली गई। प्रस्तुत संवाद देखिए - "जो काम लड़के-लड़कियों को खुद करना चाहिए, हमारे यहाँ उसे माँ बाप को करना पड़ता है। उसकी भलाई-बुराई माँ बाप को ओढनी पड़ती है। खैर... तुम बैठी सोचती रहो, मैं ख्यालिराम के बेटे से सगाई पक्की करने जा रहा हूँ।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि नाटककार गिरिराज किशोर ने पण्डित हजारीलाल के माध्यम से प्रेम विवाह की समस्या स्पष्ट की है।

3.6.4.2 अनमेलविवाह की समस्या :

आज अनमेलविवाह मनुष्य के जीवन में कठिनाइयाँ पैंदा कर रहे हैं। इस तरह की समस्या निम्न वर्ग में ज्यादा दिखाई दे रही है। दहेज, रुपये और चीज वस्तुओं की माँगे पूरी करने में यह वर्ग असमर्थ रहने से विवाह में समस्याएँ आ जाती है। अनमेल विवाह में अपना मत मारकर इच्छा-आकांक्षाओं का गल घोटकर पति का स्वीकार करना पड़ता है। अनमेलविवाह में युवती का शोषण ज्यादा होता है। इसके बारे में डॉ.वैद्यनाथ प्रसाद शुक्ल लिखते है - "भारतीय समाज में अनमेल विवाह एक भयंकर सामाजिक दोष है। नारी परतंत्र है, अत: बहुधा उसी का शोषण हुआ है।"[2] इसी संदर्भ में प्रताप नारायण श्रीवास्तव लिखते है - "हिंदू समाज में

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' घास और घोड़ा - पृष्ठ - 148
2. डा.वैजनाथ प्रसाद शुक्ल - भगवतीचरण के उपन्यासों में युगचेतना - पृष्ठ - 85

जन्म होने के अभिशाप से मुक्ति है विवाह।"[1] इसी संदर्भ में डॉ.रामेश्वर नारायण 'रमेश' लिखते हैं - "अनमेल विवाह का तात्पर्य पति-पत्नी के बीच वैवाहिक उम्र, अर्थव्यवस्था और वैचारिक संबंधित विसंगतियाँ ही है।"[2] अत: स्पष्ट होता है कि आज समाज में अनमेल विवाह के कारण पारिवारिक वातावरण दूषित हो गया है।

'नरमेध' नाटक में गिरिराज किशोर ने अनमेल विवाह की समस्या का चित्रण किया है। वन्दू और वंती एक-दूसरे से प्यार करते हैं। उनकी शादी के लिए वन्दु के पिता इद्रराव तथा वंती के पिता नरेन की अनुमति है। लेकिन वन्दु की मॉ तारा इस शादी को अनुमति नहीं देती। वह इस शादी का विरोध करती है और साथ ही वह वंती को बदचलन मानती है। उसे लगता है वंती पर रंजन और वन्दु दोनों भाई एक साथ प्यार करते हैं। इसीलिए यह शादी नहीं हो सकती। प्रस्तुत कथन देखिए - "मैं नीरा के बात से सहमत हूँ, वंती नरेन नहीं हो सकती। वह अपने बाप की नकल करती है। नकली लोग मुझे बिल्कुल पसंत नहीं। मुझे लगता है वन्दु और रंजन इसे उलझ गए। क्या पीढ़ियाँ नरेन की पीढ़ियों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी इसी तरह प्यार कर करके टूटती रहेगी? इसके लिए मैं ही दोषी हूँ। मैं ही।"[3] अत: स्पष्ट है कि विवाह के लिए पारिवारिक विचार एक होने की जरूरत है। अयोग्य व्यक्ति के साथ विवाह करने से वह अनमेल विवाह हो जाता है।

किशोर जी के 'प्रजा ही रहने दो' नाटक में अनमेल विवाह की समस्या का चित्रण किया गया हैं। इसमें महाभारत की द्रौपदी की मानसिक स्थिति का चित्रण किया गया है। इस नाटक में द्रौपदी का विवाह अनमेल विवाह है। क्योंकि द्रौपदी का विवाह पाँच पांडव याने पांच पुरुषों के साथ हुआ था। कुंती जब गांधारी को युद्ध रोकने के लिए कहती है। तब गांधारी कुंती को अपमानित करती है।

---

1. प्रताप नारायण श्रीवास्तव - विदा - पृष्ठ - 220
2. डॉ.रामेश्वर नारायण 'रमेश' - साहित्य में नारी विविध संदर्भ - पृष्ठ - 15
3. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' नरमेध - पृष्ठ - 58

प्रस्तुत संवाद देखिए - "तुम्हारी बहू मेरी बहुओं का सुहाग छीनना चाहती है। मेरा एक बेटा मरेगा तो एक बहू विधवा होगी। तुम्हारी बहू तो पाँच में से एक के मरने पर भी विधवा नहीं कहलायेगी।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि एक ही नारी को पाँच-पाँच पुरुषों के साथ मजबूरन विवाह करना पड़ता है। यह अनमेल विवाह की समस्या समाज के स्वास्थ के लिए हानीकारक बनता है।

3.6.4.3 दहेज की समस्या :

आज वैज्ञानिक युग में दुनिया बहुत सीमित हो गई है। परिणामत: देश की युवा पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति, रहन-सहन, वेशभूषा आदि का अंधानुकरन करने लगी है। तो दूसरी ओर दहेज लेनेवाला समाज आज भी पूराने धार्मिक विचारों को स्वीकार कर रहा है। इच्छित दहेज न मिलने के कारण अनेक युवतियों को जलाया जा रहा है या फिर शादी के बाद तुरंत परित्यक्ता बनाई जा रही है। दहेज के कारण कई युवतियों को आजन्म कुँवारी रहना पड़ा है। डॉ.योगेश कुमारी सुरी लिखती है - "लड़की की शिक्षा-दीक्षा पर जितना खर्चा हुआ उससे अधिक दहेज की माँग होने लगी और दहेज ने स्वार्थ का रूप धारण कर लिया। पुत्री के माँ बाप की आर्थिक परिस्थिति की प्रतिकुलता के कारण कभी-कभी माँ-बाप की विवशता के कारण दहेज की प्रथा लड़की के वैवाहिक जीवन विवशता के कारण विनाशकारी बन सकती है, बन चुकी है।"[2] अत: स्पष्ट है कि दहेज की समस्या पूरे समाज को दीमक की तरह काट रही है।

गिरिराज किशोर के 'घास और घोड़ा' नाटक में दहेज की समस्या का चित्रण किया गया है। इस नाटक में पण्डित हजारीलाल अपने बेटी का रिश्ता पण्डित ख्यालिराम के बेटे द्वारिका के साथ जोड़ना चाहता है। पण्डित ख्यालिराम और पण्ड़िताइन की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण उन्हें लगता है कि पण्डित हजारीलाल की बेटी के साथ शादी का रिश्ता तय होते ही पण्डित हजारीलाल दहेज देगा

---

1. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो - पृष्ठ - 91
2. डॉ.योगेश सुरी - यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समुसाएँ - पृष्ठ - 83

जिसके कारण अपनी आर्थिक स्थिति ठिक हो जाएगी। इसीलिए पण्डित ख्यालिराम और पण्डिताईन को खुशी होती है।प्रस्तुत कथन देखिए -"पण्डित जी की बेटी से संबंध होते ही काल कट जाएगा।साक्षात् लक्ष्मी है... राज करोगी।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि दहेज लेकर अमीर होने के ख्वाब देखनेवाले लोग अपने बेटे को बिना पूछे रिश्ता तय करते हैं।

3.6.5 आत्महत्या की समस्या :

मनुष्य जब मानसिक स्वास्थ से पीड़ित होकर तथा दु:ख, निराशा से ग्रस्त होकर जीवन यापन के लिए थक जाता है तब वह आत्महत्या का रास्ता अपनाता है। आत्महत्या का मतलब है खुद मृत्यु को गले लगाना। यही आत्महत्या आज एक समस्या बन गई है। जिसके शिकार किसान, नारी, बेरोजगारी आदी लोग है। नारी की आत्महत्या के बारे में अरविंद जैन लिखते हैं - "कोई भी औरत आत्महत्या या अध्यात्म का चुनाव स्वेच्छा से नहीं करती। उसके पीछे सामाजिक और आर्थिक मजबूरियों के जाने-अनजाने दवाब होते हैं।"[2]

गिरिराज किशोर ने 'नरमेध' नाटक में आत्महत्या की समस्या का चित्रण किया है। इस नाटक का मुख्य नारी पात्र तारा है। उसके दोनो बेटे वंती से प्यार करते है इस बात का पता उसे लगता है। इसी कारण वह बड़ा बेटा वन्दु और वंती की शादी के लिए अनुमति न देकर विरोध करती है। वन्दु तारा के इस व्यवहार से दु:खी होकर अमरिका चला जाता है। वंती की शादी दूसरे लड़के के साथ तय हो जाती है। वंती अपने शादी का कार्ड वन्दु को अमरिका भेजती है। जिस कार्ड को पढ़कर वन्दु अपनी पिताजी को चिठ्ठी भेज देता है किन्तु वह चिठ्ठी तारा के हाथ लग जाती है। उस कारण तारा दु:खी होकर खुदखुशी करने कोशिश करती है। रंजन अंकन को कहता है भैय्या की चिठ्ठी पढ़कर ही माँ घर छोड़कर चली गई है। तारा खुद को दोषी

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' घास और घोड़ा - पृष्ठ - 147
2. अरविंद जैन - औरत होने की सजा - पृष्ठ - 18

ठहराकर बार-बार खुदखुशी करने की कोशिश करती है। प्रस्तुत कथन दृष्टव्य है- "मेम साहब गैस का सिलिण्डर खोले और हाथ में जली हुई दियासलाई लिए मुँह और नाक से गैस सुड़क रही है।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि मानसिक पीड़ित हो जाने के कारण तारा आत्महत्या करने की कोशिश करती है।

गिरिराज किशोर 'जुर्म आयद' नाटक में आत्महत्या की समस्या का चित्रण किया गया है। प्रस्तुत नाटक का मुख्य नारी पात्र उम्मेदी देवी अपने परिवारवालों से पीड़ित होकर अपनी छोटी बेटी को साथ लेकर खुदखुशी करती है। लेकिन उम्मेदी बच जाती है और दुर्भाग्य से उसकी बेटी मर जाती है। इस कारण उम्मेदी पर खुदखुशी करने तथा बेटी को मार डालने के जुर्म में दफा **302** और **307** के तहत सजा सुनाई जाती है। वकील बचाव न्यायमुर्ति से कहता है कि - "इसके पास दो ही रास्ते थे या तो शेरनी बनकर उनका खुन पी जाती थी। उस हालात में भी उसके लिए दफा **307** थी। या फिर वही करती जो उसने किया...।"[2] इससे स्पष्ट है कि व्यक्ति का आधार उसका परिवार होता है अगर उस परिवार ने ही उसका जीना मुश्किल कर दिया है तो वह आत्महत्या करने के लिए विवश हो जाती है। प्रस्तुत नाटक के अंक तीन में जस्टिश शिवचरण की बेटी आशा शादी-शुदा है, वह स्वाभिमानी नारी है। लेकिन उसका पति स्वार्थ से अंधा बन जाता है। उसे आशा का दोस्तों के साथ फोन पर बाते करना अच्छा नहीं लगता। लेकिन वह अपने बॉस को खुश करने के लिए आशा को कहता है - "फोन इतना जरूरी नहीं जितना सेक्रेटरी साहब की पार्टी में मेरे साथ जाना। उन्होंने खास तौर से तुम्हें लाने के लिए कहा है। वे तुम्हें पसंत करते हैं।"[3] लेकिन आशा को पति का यह गलत आचरण ठिक नहीं लगता, वह अपने पति का विरोध करती है इसलिए उसका पति उसे पीटता है। आशा स्वाभिमानी नारी होने के कारण खुदखुशी करना पसंत करती है मगर अपनी इज्जत नहीं बेचती।

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' नरमेध - पृष्ठ - **45**
2. गिरिराज किशोर - जुर्म आयद - पृष्ठ - **21, 22**
3. वही - पृष्ठ - **35**

3.7 अंधविश्वास की समस्या :

अंधविश्वास की समस्या ने आज भी अपने तीव्र स्वरूप को नहीं छोड़ा है। यश प्राप्ति के लिए इन्सान हर हतकण्ड़े अपनाता है।आज राजनेता, क्रिकेटर तथा आम जनता भी इसके जाल में फँसे हुए हैं। आज एक तरफ विज्ञान का युग माना जाता है तो दूसरी तरफ चमत्कार, अंध विश्वास के नाम पर आम जनता फँसती जा रही है। इन्सान ने अपने स्वार्थ हेतु अंध विश्वास को फैलाया है। जो आज इन्सान को छोड़ने के लिए तैय्यार नहीं हैं। जब तक अंध विश्वास खत्म नहीं होगा तब तक सही अर्थ में देश विकसीत नहीं होगा। अंध विश्वास की समस्या के लिए राजमणि तिवारी लिखते हैं "भारत वर्ष में अंध विश्वास की जड़ कायम है और यह अंधी जड़ अपनी विभिन्न टहनियों, पत्ते, फल को फैलाकर राष्ट्र को कमजोर कर रही है। और राष्ट्र की प्रगति की बाधक हुई है।"[1] वर्तमान परिवेश में कुछ मात्रा में अंध विश्वास की जड़े नष्ट हो गयी है। लेकिन देहातों में यह समस्या बहुत गहरी है। वर्तमान युग में वैज्ञानिक दृष्टि से परिवर्तन होने के बावजूद भी भारतीय समाज में भूत-प्रेत, ग्रह-नक्षत्र, देवदासी आदि अंध विश्वासों का प्रचलन प्रमुख रूप में पाया जाता है।

'काठ की तोप' नाटक में नाटककार गिरिराज किशोर ने अंधविश्वास की समस्या को चित्रित किया है। मनुष्य जब अकेला होता है तो विचार अधिक करता है उसमें अच्छे तथा बुरे विचार भी होते हैं। अंध विश्वास के बारे में भी विचार करता है लेकिन यह विचार समस्या बन जाते हैं। इस नाटक में बडे तथा छोटे नवाब असलाह कंपनी के सदर के पास रुपयों की मदद माँगने के लिए जाते हैं, तो मटरुमल उन्हें एक कमरे में आराम करने के लिए कहता है। वहाँ एक ही पलंग होने के कारण दोनों एक-दूसरे पर शक करते हैं। बड़े नवाब अपने आप से कहता है कि - "पलंग न हुआ तीर अंदाजी हो गई।तीर निशाने पर ही लगाना चाहिए। कहीं यह जादुई पलंग तो

---

1. राजमणि तिवारी - 'संस्कृती' हमारी प्रगति की बाधाएँ अंधविश्वास पृष्ठ - 61

नहीं। लेटते ही बकरा बना दे।"[1] अत: स्पष्ट है कि मनुष्य का भय ही मनुष्य को भयभीत करता है। मनुष्य अंध विश्वास में रहता है तो उसके विकास की गति रूक जाती है।

3.8 मनोवैज्ञानिक समस्या :

मनोविज्ञान में मनुष्य के मन का अध्ययन किया जाता है। मन अदृश्य और अस्पष्ट है। उसकी स्थिति का पता उसके व्यवहार से चलता है। डॉ.देवराज उपाध्याय के अनुसार - "मानव के प्रति मानव चिंता को समझने, समझाने, देखने, बूझने के प्रयत्न को मनोविज्ञान का अध्यन कहते हैं।"[2] इसी संदर्भ में डॉ.सरयुप्रसाद चौबे जी लिखते हैं - "असामान्य व्यक्ति कि क्रियाशीलताएँ सामाजिक मर्यादाओं के अनुकूल नहीं होती। जिस व्यक्ति की क्रियाएँ सामाजिक मर्यादाओं के अनुकूल नहीं होती वह व्यक्ति असामान्य होता है। तथा जिस व्यक्ति की क्रियाएँ सामाजिक मर्यादाओं के अनुकूल होती है वह व्यक्ति सामान्य होता है।"[3] डॉ.रणवीर रांग्रा के अनुसार - "मनुष्य की अवस्था अपने परिवेश, समाज, वर्ग तथा परिवार से हटकर अपने में ही केंद्रीत होती है। उसकी बहिर्मुखता घटने लगी और वह अंतर्मुख होता गया। जीवन में बाहय संघर्ष का स्थान मानसिक संघर्ष ने लिया।"[4] मनोविज्ञान का अर्थ निम्नकोशों में इस तरह दिगया गया है -

ज्ञानकोश के अनुसार मनोविज्ञान का अर्थ है - "मन की प्रकृति और वृत्ति आदी का विवेचन करनेवाला विज्ञान।"[5], प्रमाणिक हिंदी कोश के अनुसार - "मनोविज्ञान वह शास्त्र है जिसमें चित्त की वृत्तियों या मन में उठनेवाले विचारों आदि का विवेचन होता हैं।"[6], हिंदी विश्वकोश के अनुसार - "शास्त्र विशेष : इसमें चित्त की

---

1. गिरिराज किशोर	-	काठ की तोप	-	पृष्ठ - 45
2. डॉ देवराज उपाध्याय	-	आधुनिक कथा साहित्य का मनोविज्ञान	-	पृष्ठ - 40
3. डॉ सरयूप्रसाद चौबेजी	-	असामान्य मनोविज्ञान और आधुनिक जीवन	-	पृष्ठ - 07
4. डॉ रणवीर रांग्रा	-	हिंदी उपन्यास में चरित्र-चित्रण	-	पृष्ठ - 33
5. मुकुंदीलाल श्रीवास्तव	-	ज्ञानकोश	-	पृष्ठ - 620
6. रामचंद्र वर्मा	-	प्रामाणिक हिंदी कोश	-	पृष्ठ - 882

वृत्तियों का अध्ययन होता हैं।"[1], आधुनिक हिंदी शब्दकोश के अनुसार - "मन से संघटित वह विज्ञान, जिसमें मनुष्य की मनोवृत्तियों, क्रियाओं, व्यवहारों और विभिन्न प्रभावों का विवेचन होता है।"[2], हिंदी शब्दकोश के अनुसार - "मानसिक वृत्तियों के परिक्षण द्वारा सिद्धातों की विवेचना करनेवाला शास्त्र।"[3], हिंदी शब्दसागर के अनुसार-"वह विज्ञान जिसके द्वारा यह माना जाता है कि मनुष्य के चित्त में कौन सी वृत्ति कब, क्यों और किस प्रकार उत्पन्न होती है।"[4]

डॉ.एस.एस.माथुर मनोविज्ञान के बारे में लिखते हैं कि - "मनोविज्ञान मानव तथा पशु के व्यवहार का निरीक्षण करता है। ऐसा करने में वह सदैव वैज्ञानिक विधि को अपनाता है। मानव तथा पशु का व्यवहार अंतर्गत की बाह्य अभिव्यक्ति मात्र है। इस प्रकार मनोविज्ञान एक शुद्ध विज्ञान के रूप में मस्तिष्क का अध्ययन करता है और मस्तिष्क का अध्ययन मानव तथा पशु के व्यवहार को समझने के लिए किया जाता है।"[5] अत: स्पष्ट है कि मनुष्य जब मनोवैज्ञानिक समस्या से पीड़ित होकर पशु जैसा व्यवहार करता है। तब मनोवैज्ञानिक समस्या उत्पन्न होती है। गिरिराज किशोर के नाटक में प्रस्तुत समस्या का चित्रण मिलता है।

'केवल मेरा नाम लो' इस नाटक में गिरिराज किशोर ने मनोवैज्ञानिक समस्या को चित्रित किया है। इस नाटक में रजनीकान्त की मानसिक पीड़ा को चित्रित किया है। रजनीकान्त की पत्नी रागिनी के स्वर्गवास के कारण रजनीकान्त का मानसिक स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। पहले वह अपनी बेटी सुलभा को प्यार करता था। लेकिन रागिनी की मृत्यु के बाद सुलभा के साथ बुरा व्यवहार करता है। सुलभा रागिनी की तरह दिखाई देने के कारण वह सुलभा के साथ अपनी पत्नी की तरह व्यवहार करने

---

1. संपा नगेंद्रनाथ वसु	-	हिंदी विश्वकोश भाग 16	-	पृष्ठ - 994
2. संपा गोविंद चातक	-	आधुनिक हिंदी शब्दकोश	-	पृष्ठ - 448
3. संपा श्री शरण	-	हिंदी शब्दकोश	-	पृष्ठ - 315
4. श्याम सुंदर दास	-	हिंदी शब्दसागर भाग 18	-	पृष्ठ -3790
5. डॉ.एस.एस. माथुर	-	सामान्य मनोविज्ञान	-	पृष्ठ - 16

लगता है और सुलभा जब उसे पापा कहकर पुकारती है तो उसका मानसिक स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। गिरिराज किशोर ने इस नाटक के माध्यम से रजनीकान्त की मानसिक पीड़ा को चित्रित किया है। साथ ही उसकी मानसिक पीड़ा से त्रस्त सुलभा की भावनाओं का चित्रण किया है। प्रस्तुत कथन देखिए - "अब उनके व्यवहार से लगता है उन्होंने कभी किसी को प्यार ही नहीं किया।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि मानसिक संतुलन बिगडने से मनुष्य पशु जैसा व्यवहार करने लगता है।

3.8.1 चंचल वृत्ति की समस्या :

मनुष्य जब कठिण उलझन में फँसता है तो उसके अंदर दो स्थितियाँ पैदा होती है। जिससे उसकी मानसिक स्थिति चंचल होती है। उस कारण वह ठिक तरह निर्ण य नहीं ले सकता। चंचलवृत्ति यह समस्या बन गई है। जो व्यक्ति के विकास को विरोध कर रही है। चंचलवृत्ति के कारण मनुष्य कि मानसिक स्थिति बिगड़ जाती है और उसे सही दिशा नहीं मिल सकती। चंचल वृत्ति का मतलब अपने ही भरोसे पर अशंकित नजर से देखना।

'नरमेध' नाटक में गिरिराज किशोर ने चंचल वृत्ति की समस्या को चित्रित किया है। इस नाटक में तारा की चंचल वृत्ति दिखाई देती है। तारा पहले नरेन से प्यार करती है और बाद में अपने पति इन्द्रराव से प्यार करने लगती है। इसी कारण तारा नरेन की बेटी वंती को बहू बनाने से विरोध करती है। वंती से एकतर्फा प्रेम करनेवाला रंजन वंती को ही चंचल मानता है। वह अंकन को वंती के बारे में बताता है। प्रस्तुत संवाद देखिए - "मजे की बात तो यही है कार्ड उसे भेजा जो आ नहीं सकता। वंती पहले मुझसे प्यार करती थी। फिर भैय्या को करने लगी अब अपने पति से करेगी।"[2] स्पष्ट है कि यहाँ रंजन के साथ-साथ वंती की चंचल वृत्ति भी स्पष्ट होती है।

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' केवल मेरा नाम लो - पृष्ठ - 250, 251
2. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' नरमेध - पृष्ठ - 37

'घास और घोड़ा' नाटक में गिरिराज किशोर ने चंचल वृत्ति की समस्या को स्पष्ट किया है। प्रस्तुत नाटक में पण्डित ख्यालिराम की पत्नी पण्डिताईन की चंचल वृत्ति दिखाई देती है। दहेज ज्यादा मिलेगा इस आशा से वह अपने बेटे द्वारीका का पण्डित हाजारीलाल की बेटी के साथ रिश्ता पक्का करवाती है। इसी नाटक में विमला यह नारी भी चंचलवृत्ति की दिखाई देती है। वह रामनिरख के पीछे प्रधान के बेटे के साथ यौन संबंध रखती है। वह प्रधान के बेटे को समझाने का प्रयास करती है। प्रस्तुत कथन देखिए - "हँसो नहीं समझो। पराई औरत कम कठपुतली ज्यादा हो जाती है। मुझे लगता है न मैं तुम्हारें साथ औरत रह पाती हूँ न उसके साथ। उनके दाँत गंधे है, तुम्हारें उजले, पर औरत तो उन्हीं कि हूँ...।"[1] अत: यहाँ विमला की चंचल वृत्ति स्पष्ट होती है।

3.8.2 कुंठित वासना की समस्या :

मनुष्य की भावनाओं को न खोलने से भावना अंदर ही अंदर घूट कर रह जाती है। जिस कारण मनुष्य के अंदर की भावना कुंठित रूप धारण करती है। कुंठित भावना के कारण मनुष्य गलत कार्य भी करता है। जब तक मनुष्य विचारों को स्पष्ट नहीं करता तब तक वह उन विचारों से बाहर नहीं आ सकता। इसी कुंठित वासना की समस्या के कारण खुन, बलात्कार, चोरी आज इस समस्या का असर बुरी तरह हो रहा है। बड़े पैमाने पर हो रहा हैं।

'घास और घोड़ा' नाटक में गिरिराज किशोर ने कुंठित वासना की समस्या का चित्रण किया है। इसमें प्रधान का बेटा विमला से संबंध रखता है। उसकी तरफ वासना की नजर से देखता है। प्रस्तुत कथन देखिए - "अभी तो जाता हूँ। रोटी टुकडे के बाद आऊँगा। तब तक...।"[2] इससे स्पष्ट होता है कि प्रधान का बेटा अपनी कुंठित वासना मजबूर लोगों को हवस का शिकार बनाकर पूरी करता है।

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' घास और घोड़ा - पृष्ठ - 163
2. वही - पृष्ठ - 161

'केवल मेरा नाम लो' इस नाटक में गिरिराज किशोर ने कुंठित वासना की समस्या को चित्रित किया है। इस नाटक में रजनीकान्त की पत्नी रागिनी की मौत हो जाने के कारण रजनीकान्त की मानसिक स्थिति बिगड़ जाती है। सुलभा उसकी बेटी है लेकिन सुलभा रागिनी की तरह दिखाई देने के कारण वह अपने बेटी की ओर कुंठित वासना से देखता है। सुलभा जब उसे पापा कहकर पुकारती है तब वह सुलभा पर चिल्लाता है। प्रस्तुत कथन देखिए - "फिर... पापा..... भूल जाओ, इस मनहूस संबंध को भूल जाओ। रागिनी की तरह मुझे रजनी कहकर पुकारो...।"[1]

स्पष्ट है कि यहाँ पिता ही अपनी बेटी की ओर वासना की दृष्टि से देखता है जो उसकी कुंठित वासना ही है।

'जुर्म आयद' नाटक में भी गिरिराज किशोर ने कुंठित वासना की समस्या को चित्रित किया है। इन्सान में जब कुंठित वासना निर्माण हो जाती है तब वह रिश्ते नाते भूल जाता है। प्रस्तुत नाटक में उम्मेदी को खुदखुशी और बेटी के कत्ल के जुर्म में जेल में बंद किया जाता है। वहाँ का बूढ़ा दरोगा उम्मेदी के बाप के उम्र का है फिर भी वह उम्मेदी को कुंठित वासना से देखता है। उम्मेदी के बारे में गंदी बातें करता है। उम्मेदी उसे कहती है - "है दरोगा, बात कर रहे है चिड़िया के बी जैसी। मेरी छोरी चली गयी, तू रसिया बन के आया है। मेरे बापू के उमर का आदमी तूने मुझे क्यों नी उठा लिया रे भगवान...।"[2] इससे बूढ़े दरोगा की कुंठित वासना स्पष्ट हो जाती है। गिरिराज किशोर ने अपने नाटक के माध्यम से समाज में व्याप्त कुंठित वासना को स्पष्ट किया है।

3.8.3 अराजक वृत्ति की समस्या :

अराजकता प्रतिशोधात्मक वृत्ति है। मनुष्य जब विद्रोहात्मक तथा प्रतिशोध की भावना से पीड़ित होता है तब खुद ही अनेक समस्याओं से उलझता रहता हैं। मनुष्य के पास अनेक भयानक विचार होते हैं। जिन विचारों के कारण उसे अनेक

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' केवल मेरा नाम लो - पृष्ठ - 283
2. गिरिराज किशोर - जुर्म आयद - पृष्ठ - 14

समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं। मनुष्य जब तक सही दिशा में अपने विचार को नहीं लाता तब तक उसे योग्य रास्ता नहीं मिलता। वह उलझनों में ही फँसता रहता है। अपने विचारों में आदान-प्रदान होना आवश्यक है। अपने ही विचारों को श्रेष्ठ मानना ही अराजक वृत्ति है। जो बढ़ने के कारण भयानक परिणामों को भुगतना पड़ता है।

'प्रजा ही रहने दो' नाटक में गिरिराज किशोर ने आराजक वृत्ति की समस्या को चित्रित किया है। इस नाटक में सुयोधन की अराजक वृत्ति को चित्रित किया गया है। सुयोधन विदुर को बताता है कि आप कोई भी दोष मुझ पर मत लगाइए। जीने मरने का निर्णय लेने का मुझे अधिकार है। मुझे जो उचित लगे स्वयं वह करुँगा। लेकिन गांधारी उसकी आराजक वृत्ति देखकर उसे समझाती है। प्रस्तुत कथन देखिए - "सुयोधन, अपनी सीमा मत लांघो। दूसरों को आदर देकर ही मनुष्य भाग्यशाली बन जाता है। अराजकता से नहीं बच पाओगे।"[2] इससे स्पष्ट होता है कि मनुष्य अपने आप को बलशाली दिखाने के लिए अराजक वृत्ति निर्माण करता है। इसी वृत्ति के कारण अनेक बार मनुष्य पूरे विश्व को ले डूबता है।

निष्कर्ष :

मनुष्य जन्म से लेकर अंत तक किसी-न-किसी समस्या में फँसता रहता है लेकिन उस समस्या का सामना करके अपनी मंझिल पाने की कोशिश जारी रखता है। 'समस्या' के कारण मनुष्य क्रियाशील बन जाता है। गिरिराज किशोर ने अपने नाट्य कृति के माध्यम से समाज में व्याप्त समस्याओं को स्पष्ट किया है। वे इस प्रकार हैं -

पहली समस्या है-'आर्थिक समस्या' इससे यह स्पष्ट किया गया है कि इन्सान को अपना जीवन यापन करते समय उसके पास 'अर्थ' का होना महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि अर्थ की समस्या के कारण ही अनेक समस्याएँ निर्माण होती है। अर्थ न होने के कारण वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति भी ठिक तरह से नहीं कर पाता है। परिणामत: अभावग्रस्त जीवन जीना पडता है।

1. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो - पृष्ठ - 76

दुसरी समस्या 'सामाजीक समस्या'से स्पष्ट होता है कि मनुष्य जिस समाज में रहता है उस समाज में स्थित समस्याओं का सामना करके उसे आगे निकलना पड़ता है। समाज में अनेक प्रकार की समस्याएँ होती हैं। 'अंधे कानून की समस्या' से यह स्पष्ट होता है कि कानून मनुष्य की समस्याओं को नहीं बल्कि सिर्फ उसकी गुनाह को देखता है। इसलिए कभी-कभी गुनहगार को छोड़कर सामान्य व्यक्ति पर जुर्म साबित किया जाताहै।

'घटती मानवीयता की समस्या' से यह स्पष्ट होता है कि इन्सान; होकर भी मानवीयमूल्यों को तिलांजली दे रहा है और अपनी मंझिल पाने के लिए रिश्ते-नाते भूल रहा है। 'जंगल तोड़ की समस्या' में स्पष्ट लिखा गया है कि आज मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जंगल को तोड़ रहा है जिसका परिणाम सारी सृष्टि को भुगतना पड़ रहा है। बारीश बरसना बंद हो गया है। इसलिए अकाल, बाढ़ इन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

'बढती स्वार्थी वृत्ति की समस्या' से स्पष्ट होता है, कि मनुष्य अपनी मंझिल पाने के लिए गलत रास्तों को अपना रहा है। वह इस समस्या में इतना फँसा हुआ है कि रिश्ते-नाते तक भूल गया है। 'भीषण युद्ध की समस्या' से स्पष्ट किया गया है कि युद्ध की समस्या ने पूरी तरह से देश को घेर रख्खा है। अपना अस्तित्व हमेशा बनाए रखने के लिए एक देश दूसरें दो देशों को आपस में लढ़ाने का प्रयास कर रहा है। जिससे मनुष्य का जीना मुश्किल हो गया है। 'समाज में बढ़ते गैर कानूनी कार्य करने की समस्या' से स्पष्ट होता है कि मनुष्य गलत रासों को अपनाकर अपनी इच्छित मंझिल पाने की कोशिश कर रहा है। अपने अधिकारों का गलत इस्तेमाल करके सामान्य लोगों का जीना मुश्किल कर रहा है।

'अनैतिक संबंधों की समस्या' से स्पष्ट होता है कि मनुष्य अपनी कुंठित वासनाओं में फँसा हुआ है। इसलिए मनुष्य अपने अनैतिक संबधों के आड़ आनेवाले रिश्ते-नातों का कत्ल करने पर भी तुला हुआ है।'आत्मसम्मान की समस्या' से स्पष्ट होता

है कि हर मनुष्य को अपना एक अलग स्थान तथा आत्मसम्मान होता है। लेकिन जब उसके आत्मसम्मान को ठेस पहुँचती है तब वह अपने आप पर काबू नहीं रख पाता है। 'प्रतिशोध की समस्या' से स्पष्ट होता है कि मनुष्य स्वयं पर हुए अत्याचारों का विद्रोह करते हुए प्रतिशोध की समस्या में फँस जाता है। जिसमें दूसरों का अहित करने का प्रयास करता है। यहाँ तक भी वह रिश्ते-नाते भी भूल जाता है।

'समाज में बढ़ता खोखलापन या दिखावटीपन की समस्या' से स्पष्ट होता है कि मनुष्य समाज में अपना महत्त्व बढ़ाने के लिए तथा अपना स्थान हमेशा ऊँचा बनाए रखने के लिए दिखावटीपन की समस्या में उलझता जा रहा है। अपनी औकाद से ज्यादा खर्च करने के कारण इस समस्या के परिणामों को उसे भुगतना पड़ रहा है।' पूरानी और नई पीढ़ी के बीच संघर्ष की समस्या' से स्पष्ट होता है कि आधुनिकता के कारण पूरानी और नई पीढ़ी के विचारों में दरार पैदा होने के कारण संघर्ष निर्माण हुआ है। इसलिए वे दोनों एक-दूसरे से दूर होते जा रहे हैं। 'चापलुसी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि है मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दूसरों की चापलुसी कर रहा है। इस समस्या के कारण मनुष्य अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए दूसरों का अहित करने पर तुला हुआ है। 'शोषण की समस्या' से स्पष्ट होता है कि अपने अधिकारों का गलत इस्तेमाल करके मनुष्य सामान्य लोगों पर अत्याचार कर रहा है। 'जातिभेद की समस्या' से स्पष्ट होता है कि देश एक तरफ वैज्ञानिक युग में तरक्की तो कर रहा है। लेकिन दूसरी तरफ जाति-पाँती के भेद के कारण मनुष्य-मनुष्य का कत्ल कर रहा है। जिसमें वह आंतरजातीय विवाह का विरोध कर रहा है।

इन समस्याओं के बाद तिसरी समस्या है 'राजनीतिक समस्या'। इस समस्या से स्पष्ट होता है कि मनुष्य-मनुष्य में, राज्यों-राज्यों में, देशों-देशों में संघर्ष निर्माण हुआ है। अपनी सत्ता का स्थान बनाए रखने के लिए मनुष्य 'राजनीतिक समस्या' में उलझा हुआ है। इस समस्या के कारण दूसरी समस्याएँ निर्माण हो गई है। जिसमें

'कुटनीति और धोखेबाजी की समस्या' है। इस समस्या से स्पष्ट होता है कि 'मनुष्य अपने अधिकारों के बलबुतों पर कुटनीति को अपनाकर धोखेबाजी कर रहा है।

'समाज में बढ़ता भ्रष्टाचार' इस समस्या से स्पष्ट होता गया है कि मनुष्य अपने मक्सद में कामयाव होने के लिए भ्रष्टाचार कर रहा है। जिस कारण समाज का विकास नहीं हो रहा है।आम व्यक्ति को न्याय मिलना मुश्किल हो गया है। 'रिश्वत खोरी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पर्ति के लिए इस समस्या में उलझता जा रहा है। जिस कारण बेगुनाह को सजा दी जाती है और गुनहगार को खुले आम छोड़ दिया जाता है।

चौथी समस्या है 'पारिवारिक समस्या'। आज यह समस्या प्रमुख रूप धारण कर रही है। विचारों में अंतर होने के कारण पारिवारिक विघटन हो रहा है। इस समस्या के कारण अनेक समस्याएँ पैदा हो गई हैं। 'टूटते पारिवारिक संबंधों की समस्या' से स्पष्ट होता है कि आधुनिक विचार तथा पूराने विचारों का मिलाप न होने के कारण परिवार में संघर्ष निर्माण होने लगें हैं जिससे मनुष्य अपने आप को परिवार से अलग मानकर परिवार से दूर होता जा रहा है। 'बदलते रिश्तों की समस्या' से स्पष्ट होता है कि मनुष्य अपना स्थान बनाए रखने के लिए रिश्ते-नाते भूल रहा है तथा विचारों में दरार निर्माण होने के कारण यह समस्या बढ़ती ही जा रही है।

'माता-पुत्र के टूटते संबंध की समस्या' से स्पष्ट होता है कि अपने पूराने विचार अपने बेटे पर लादने का प्रयास करने के कारण तथा विचारों में संघर्ष होने के कारण माता-पुत्र के संबंध बिघड़ते जा रहे हैं। 'पति-पत्नी के टूटते संबंध की समस्या' से स्पष्ट होता है कि अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक-दूसरे पर अत्याचार करने के कारण पति-पत्नी के संबंधों की समस्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है।

'वृद्ध लोगों की समस्या' से स्पष्ट होता है कि मनुष्य के जीवन में बचपन तथा बुढ़ापा आना स्वाभाविक है। इन दोनों में एक ही साम्य है वह है दूसरों का सहारा पाना। इसके बिना उनको अपना जीवन यापन करना मुश्किल हो जाता है। वृद्ध लोगों

का आधार उनकी संतान होती है। अगर उनके सामने ही उनके संतान की मृत्यु होती है तो वे बेसहारा हो जाते हैं।

'विवाह की समस्या' से स्पष्ट होता है कि यह भी एक महत्त्वपूर्ण समस्या बन रही है। इस समस्या में अनेक समस्याएँ है जिनमें से 'प्रेम विवाह की समस्या' से स्पष्ट होता है कि मनुष्य प्रेम विवाह में जाती-पाँती नहीं देखता। लेकिन समाज का विरोध कि होने के कारण उसे कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। 'अनमेल विवाह की समस्या' से स्पष्ट होता है कि जिस विवाह का मेल नहीं हो पाता वह अनमेल विवाह होता है। जिसमें एक ही नारी को पाँच-पाँच पुरुषों के साथ शादी करनी पड़ती है। इस अनमेल विवाह के कारण उस नारी को जीवन यापन करना मुश्किल हो जाता है।

'दहेज की समस्या' से स्पष्ट होता है कि मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए 'दहेज की समस्या' में फँसता गया है। शादी का रिश्ता पक्का करने के लिए वह दिखावटीपन भी कर रहा है।'आत्महत्या की समस्या' से स्पष्ट होता है कि मनुष्य खुद को असाहय मानकर खुदखुशी करने पर तुला है। वह समस्याओं का सामना करते-करते थककर यह गलत मार्ग अपनाता हैं। 'अंधविश्वास की समस्या' से स्पष्ट होता है कि समाज को विकास को रोकने का काम यह समस्या करती है। जिसमें पूराने विचारों का प्रभाव होने के कारण मनुष्य अकेलेपन से घबरा जाता है।

छठ्ठी समस्या 'मनोवैज्ञानिक समस्या' इस समस्या से स्पष्ट होता है कि मनुष्य पर हुए अत्याचार के कारण वह मानसिक दृष्टि से कमजोर बन जाता है। इस समस्या के कारण अनेक समस्याएँ आती है। जिसमें से 'चंचल वृत्ति की समस्या' से स्पष्ट होता है कि अपने आप पर विश्वास न होने के कारण अपने विचारों में चंचलता पैदा होती है। जिससे दूसरें परिणामों को भुगतना पड़ता है।'कुंठित वासना की समस्या' से स्पष्ट होता है कि 'मनुष्य अपने अंदर छिपी हुई किसी कुंठित वासना' के कारण नारी को अपनी हवस का शिकार बनाने के लिए उस पर अत्याचार करता है। इस समस्या के कारण वह रिश्ते-नाते भी भूल जाता है।'आराजक वृत्ति की समस्या' से स्पष्ट होता है

कि अपना स्थान निर्माण करने के लिए मनुष्य योग्य विचारों को ठुकराकर गलत विचारों को अपनाता है। परिणामत: उसके परिणाम उसे स्वयं भुगतने पड़ते हैं।

संक्षेप मे कहा जा सकता है कि नाटककार गिरिराज किशोर ने अपनी नाट्य कृतियों में हर समस्या का बड़ी बखुबी से चित्रण किया है।